पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

# मातृवन्दना

माघ-फाल्गुन, कलियुगाब्द 5119, फरवरी 2018

## पारस्परिक एकता से राष्ट्रहित

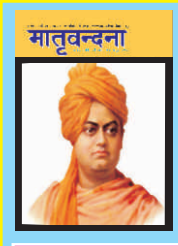

# मातृवन्दना

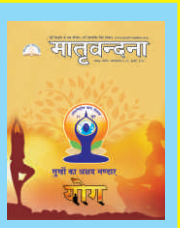

*सदस्यता अभियान 2018-19*

1-15 फरवरी 2018




बहुमूल्य सामग्री एवं सुन्दर कलेवर के साथ पाठकों की सेवा में समर्पित

| | |
|---|---|
| हिमाचल की सर्वाधिक प्रसार वाली पत्रिका | सर्वाधिक स्थानों तक पहुंच |
| 35 हज़ार परिवारों तक पहुंच | दो लाख से अधिक पाठक |
| नववर्ष का आकर्षक कैलेण्डर निःशुल्क | समाचार ही नहीं संस्कार भी |

**पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार**

*अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :*

**प्रबन्धक, मातृवन्दना**

डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाऊस, शिमला - 171 004,

दूरभाष : 0177-2836990

*email: matrivandanashimla@gmail.com*

*website: www.matrivandana.org*

**वार्षिक शुल्क**

**100 रुपए**

आजीवन सदस्य ( 15 वर्ष )

1000/- रुपए

नियमित पाठकों से निवेदन है कि अपनी सदस्यता का नवीनीकरण उपर्युक्त समय पर अवश्य करवाएं।

आप भी इसके सदस्य व वितरक बनकर समाज में स्वच्छ व राष्ट्रीय विचारों के प्रचार में सहभागी बनें।

## सूचना

*वर्ष 2018-19 में मातृवन्दना पत्रिका प्रकाशन के 25 वें वर्ष में रजत जयंती समारोह का आयोजन किया जा रहा है। इस हेतु मार्च 2018 का वर्ष प्रतिपदा विशेषांक 'हिमाचल गौरव' प्रकाशित करने की योजना बनी है। अतः लेखकों एवं कवियों से निवेदन है कि अपने लेख व कविताएं 15 फरवरी 2018 तक मातृवन्दना सम्पादकीय कार्यालय में हस्तलिखित या टाईप करवाकर डाक द्वारा या मेल पर निर्धारित तिथि तक अवश्य भेज दें।*

**सम्पादक, मातृवन्दना**

डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाऊस, शिमला - 171 004,

दूरभाष: 0177-2836990 मो. 9805036545

*email: matrivandanashimla@gmail.com | website: www.matrivandana.org*

*मातृवन्दना पत्रिका में विज्ञापन प्रकाशित करने हेतु सम्पर्क करें:*

**प्रबन्धक, मातृवन्दना**

दूरभाष: 0177-2836990

डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाऊस, शिमला - 171 004,

*email: matrivandanashimla@gmail.com | website: www.matrivandana.org*

*प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः*
*तस्मात्तदेव वक्तव्यं वचने का दरिद्रता*

*अच्छे शब्द वाक्य सबको प्रिय लगते हैं। इसलिए बोलने में प्रिय शब्दों का प्रयोग करना चाहिए इसमें कृपणता का क्या काम है।*


वर्ष : 18 अंक : 2

# मातृवन्दना

माघ-फाल्गुन, कलियुगाब्द 5119, फरवरी 2018

**सम्पादक**
डॉ. दयानन्द शर्मा

**सह-सम्पादक**
वासुदेव शर्मा

**सम्पादक मण्डल**
दलेल सिंह ठाकुर
डॉ॰ अर्चना गुलेरिया
नीतू वर्मा

**पत्रिका प्रमुख**
राजेन्द्र शर्मा

**वितरण प्रमुख**
जय सिंह ठाकुर

**प्रबन्धक**
महीधर प्रसाद

**वार्षिक शुल्क**
**100 रुपये**

**कार्यालय**
**मातृवन्दना**
**डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस**
**शिमला-171 004**
**दूरभाष : 0177-2836990**

e-mail:
www.matrivandana.org
matrivandanashimla@gmail.com

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, PI-820, फेस-2, उद्योग क्षेत्र, चण्डीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-171004 से प्रकाशित।
**सम्पादक: डॉ. दयानंद शर्मा।**
**वैधानिक सूचना:** पत्रिका का सम्पादकीय कार्य पूर्णत: अवैतनिक है। पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।


## पारस्परिक एकता में निहित है राष्ट्रहित

वामपंथी इसे महारों की ब्राह्मणों पर जीत का प्रतीक मानते हैं। सामान्यत: इस पर सवर्णों द्वारा कभी कोई आपत्ति जाहिर नहीं गई किन्तु इस वर्ष इस उत्सव में योजना बद्ध तरीके से लाखों की संख्या में लोग इकट्ठा किए गए। एक नवयुवक की जान चले जाने पर तथा स्मारक पर कुछ तोड़-फोड़ होने के कारण दंगे भड़क उठे। जिग्नेश मेवाणी जैसे जातिगत राजनीति करने वाले और उमर खालिद जैसे असामाजिक तत्व का वहां पहुंचना तथा उकसाऊ भाषण देना इस बात को सही साबित करता है कि यह सारा षड्यन्त्र दलित वर्ग को सवर्णों से पृथक् करके उनके खिलाफ भड़काने और राजनीतिक लाभ प्राप्त करने के लिए ही रचा गया था। सबसे बड़ा राष्ट्रहित विभिन्न समुदाय एवं वर्गों की पारस्परिक एकता में ही निहित है।


| | | |
|---|---|---|
| सम्पादकीय | पारस्परिक एकता में निहित है राष्ट्रहित | 3 |
| प्रेरक प्रसंग | वैज्ञानिक की विनम्रता | 4 |
| चिंतन | मन-मंदिर प्रभु आप बसौ | 5 |
| आवरण | भीमा कोरेगांव (महाराष्ट्र) | 6 |
| संगठनम् | धर्मान्तरण के खिलाफ विहिप | 10 |
| देश प्रदेश | आचार्य देवव्रत ने दी सांसदों | 12 |
| देवभूमि | अंगूठा लगाओ राशन पाओ | 14 |
| घूमती कलम | आपदाओं के दौरान जान | 17 |
| विविध | असम में 20 हजार फर्जी नागरिक | 19 |
| दृष्टि | मण्डी का महाशिवरात्रि महोत्सव | 20 |
| काव्य जगत | जुआन | 21 |
| कृषि | खेती के लिए वरदान है वर्मी | 22 |
| स्वास्थ्य | आयुर्वेद से आयुष्मान | 23 |
| युवापथ | कसौली में सम्पन्न हुआ | 24 |
| महिला जगत | तीन तलाक पर छिड़ी राजनीतिक बहस | 25 |
| विश्वदर्शन | अमेरिका में हो रहा दुनिया के सबसे | 26 |
| समसामयिकी | विकास की ओर अग्रसर हिमाचल | 28 |
| प्रतिक्रिया | नाहक विवाद | 30 |
| बाल जगत | भारतीय रेलवे की एक अभिनव | 31 |

## पाठकीय

महोदय,

हिमाचल में नई विधानसभा का गठन हो गया है। सरकार अपना काम कर रही है। चुनावों में यहां की जनता ने कई नए चेहरों को चुनकर भेजा और कई धुरंधरों को नकार भी दिया। यह सब अप्रत्याशित था। अनुभव में आया है जो नेता पिछले पांच वर्ष जमीन से जुड़े रहे उन्हें जनता का आशीर्वाद प्राप्त हुआ और दूरी बनाने वाले सफल न हो सके। लोकतंत्र में राजनीतिक दल, उनकी सोच और उससे जुड़े राजनेताओं के चरित्र का महत्व रहता है। इन तत्वों की गुणवत्ता बढ़ने से लोकतांत्रिक मूल्यों का पोषण होता है। कम समय में जन आकांक्षाओं को पूरा करना बहुत कठिन है। लेकिन इस दिशा में ईमानदारी दिखाना आवश्यक है। राजनीति सेवा का माध्यम बने इस दिशा में नई विधानसभा में चुनकर आए कुछ सदस्यों की पहल सराहनीय है। मिलने वाले वेतन को जरूरतमन्द व गरीब लोगों की मदद में लगाने की सोच अच्छी है। पूर्व में भी हम देखें तो बहुत से हमारे जन प्रतिनिधि विभिन्न न्यासों और संस्थाओं के माध्यम से जन सेवा को अंजाम दे रहे हैं। इससे जनता में राजनीति को देखने का एक अच्छा सन्देश गया है। राजनीति और सेवा एक दूसरे के पर्याय बनें ऐसा वातावरण देखने को मिलना चाहिए। सरकार और विपक्ष का अंतर समाप्त कर जनहित के मुद्दों को ईमानदारी के साथ धरातल पर उतारने के प्रयास होने चाहिए। सेवा हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। इसे अपने कार्य क्षेत्र का हिस्सा बनाने से आने वाली पीढ़ियों को एक सही मार्गदर्शन प्राप्त हो सकता है।❖ **जोगिन्द्र ठाकुर गांव व डाकघर भल्याणी कुल्लू हि.प्र.**

महोदय,

देश को आजाद हुए सत्तर वर्ष बीत गए मगर भारत वर्ष की सही तरीके से तस्वीर नहीं बदल पाई है। केंद्र व प्रदेशों में सरकारें आई व चली गई। सत्तासीन सरकारों ने अपनी ओर से इस भारत वर्ष में भी विकास करवाया मगर देश की वर्तमान हालत देख कर मानों ऐसा लगता है कि देश की बिगड़ी हालत को सुधारने लिए बहुत कुछ करने को बाकी है। जिसको लेकर सत्तासीन सरकार को गम्भीर चिन्तन करने की आवश्यकता है। सरकार ने जो वृद्ध, विधवा तथा अपंग पात्र के लिए पेंशन लगाई है वे भी समय पर मिलने के वजाय वर्ष में चार से छह माह में मिल पाती है। वहीं सरकारी डिपुओं में सस्ते दाम पर सामान खरीदने के लिए लोग जाते हैं भारी भीड़ होने के कारण एक से दो दिन लग जाते हैं मगर फिर भी उन्हें सामान पर्याप्त मात्रा में नहीं मिल पाता है। ऐसे में आम लोगों को भारी परेशानी झेलनी पड़ती है इस समस्या के बारे में भी नई सरकार को पुनः विचार विमर्श कर लेना चाहिए। वहीं दुर्गम क्षेत्रों में सरकारी बसों की सुविधा भी न के बराबर आती है। दुर्गम क्षेत्रों में रह रहे विभिन्न पास धारकों को सरकारी बसों की सुविधा लेने से बिल्कुल वंचित रहना पड़ता है। वहीं दुर्गम क्षेत्रों में सरकार दवारा विकास कार्यों के लिए दी जाने वाली धन राशि में भी बढ़ोतरी करने की भी सख्त आवश्यकता है क्योंकि इन क्षेत्रों की कई पंचायतों के गांव मुख्य सड़क मार्ग से आठ से दस किलो मीटर दूर हैं जहां आज भी सड़क की सुविधा नहीं मिल पाई है। जिस कारण गांव से दूर स्थापित की गई सरकारी डिपुओं व सोसायटियों से खरीदा हुआ राशन भी लोग अपनी पीठ पर लाद कर अपने घरों तक पहुंचाते हैं। मैं अपनी लेखनी के जरिए तथा मातृवन्दना के माध्यम से प्रदेश की नई सरकार व केंद्र सरकार को अवगत करवाना चाहता हूं कि दुर्गम क्षेत्रों का खास कर ध्यान रखा जाए। ❖ **खुशी राम ठाकुर लक्कड़ बाजार बरोट, जिला मण्डी।**


**शिकायत व सुझाव के लिए सम्पर्क करें अथवा लिखें**
**0177-2836990**
**ई-मेलः** matrivandanashimla@gmail.com
**आप हमें व्हॉट्सएप, फेसबुक, टिव्टर व यू-ट्यूब पर भी संपर्क कर सकते हैं।**


**सभी सुधी पाठकों व विज्ञापनदाताओं को महाशिवरात्रि व होली के उत्सव की हार्दिक शुभकामनाएँ।**

## स्मरणीय दिवस ( फरवरी )

| | |
|---|---|
| श्रीगुरू गोलवलकर जयंती | 11 फरवरी |
| विजया एकादशी | 11 फरवरी |
| महाशिवरात्रि | 13 फरवरी |
| श्रीरामकृष्ण परमहंस जयंती | 17 फरवरी |
| पंचक समाप्ति | 20 फरवरी |
| आमला एकादशी | 26 फरवरी |
| होली उत्सव | 02 मार्च |
| पापमोचनी एकादशी | 13 मार्च |
| चैत्र शुक्ल प्रतिपदा नववर्षारम्भ | 18 मार्च |
| श्री रामनवमी | 25 मार्च |

# पारस्परिक एकता में निहित है राष्ट्रहित

प्रत्येक राष्ट्र का अतीत, उसके लिए भविष्य में सर्वदा प्रेरक और मार्गदर्शक बना रहता है। जो राष्ट्र इसे अनदेखा कर, आगे बढ़ने की कल्पना करता है, वह भले ही भौतिक एवं आर्थिक स्तर पर विकसित हो भी जाए किन्तु सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों में खरा उतरने में उसे कई बाधाओं का सामना करना पड़ता है। भारत का गौरवमय इतिहास वैदिककाल से लेकर परतन्त्र होने के पूर्व तक अप्रतिम एवं विश्व-वन्दनीय रहा है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्', 'सर्वे भवन्तु सुखिनः', संगच्छध्वम् संवदध्वम्' की वैचारिक दृष्टि विश्व को प्रदान करने वाला केवल भारत है। प्राचीन भारतीय संस्कृति की यह सबसे बड़ी विशेषता थी कि यहां सबको समान अवसर प्राप्त थे। समाज में समरसता बनी हुई थी। कोई उत्पीड़ित या अत्यन्त पिछड़ा नहीं था। विदेशी आक्रान्ताओं के आक्रमण के पश्चात्, परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़े जाने से भारतीय जनमानस में असुरक्षा की भावना उत्पन्न हुई। भेदभाव और जातिगत विषमताएं बढ़ने लगीं। समरस समाज में टूटन आने लगी। विदेशी शासकों ने जलती आग में घी डालने का काम किया।

उत्तरकाल में महान धर्माचार्यों, सूफी सन्तों, महात्मा गांधी तथा स्वतन्त्रता प्राप्ति हेतु प्रयासरत अग्रणी नेताओं एवं क्रान्तिकारियों ने देश को पुनः संगठित किया और स्वतन्त्रता प्राप्त की। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् आज भी हम मानसिक रूप से विदेशी संस्कृति के प्रभाव से मुक्त नहीं हुए हैं। भारतीयता का अंशमात्र ही हम में दिखाई देता है। अंग्रेजों की 'फूट डालो, राज करो' की नीति फल-फूल रही है। सत्ता प्राप्ति की होड़ में आम जनता का राजनीतिकरण कर दिया गया है। इन्सान की पहचान इन्सान के तौर पर नहीं अपितु उसके धर्म, पंथ-सम्प्रदाय, जाति क्षेत्र, भाषा एवं राजनीतिक विचारों के आधार पर आंकी जाती है। आदमी का आदमी न बने रहने के लिए उसे अमीर-गरीब, ऊंच-नीच, अगड़ा-पिछड़ा और न जाने क्या-क्या बना दिया गया है। तथाकथित सेकुलर दलों ने पहले अल्प-संख्यकवाद का कार्ड खेला। सत्ता में रहते हुए तुष्टिकरण की नीति अपनाकर हिन्दु बहुल समाज की अवहेलना की। सत्ताच्युत होने पर अब हिन्दू-समाज में ही फूट डालने के प्रयास प्रारम्भ हो चुके हैं। समाज के अलग-अलग वर्गों को उकसाया-भड़काया जा रहा है जिसका जीता-जागता प्रमाण जनवरी मास के प्रारम्भ में महाराष्ट्र के कोरे गांव की घटना है। कोरे गांव में अंग्रेजों द्वारा बनाए गए एक युद्ध स्मारक पर प्रति वर्ष महार दलित वर्ग उत्सव मनाता है।

वामपंथी इसे महारों की ब्राह्मणों पर जीत का प्रतीक मानते हैं। सामान्यतः इस पर सवर्णों द्वारा कभी कोई आपत्ति जाहिर नहीं गई किन्तु इस वर्ष इस उत्सव में योजना बद्ध तरीके से लाखों की संख्या में लोग इकट्ठा किए गए। एक नवयुवक की जान चले जाने पर तथा स्मारक पर कुछ तोड़-फोड़ होने के कारण दंगे भड़क उठे। जिग्नेश मेवाणी जैसे जातिगत राजनीति करने वाले और उमर खालिद जैसे असामाजिक तत्व का वहां पहुंचना तथा उकसाऊ भाषण देना इस बात को सही साबित करता है कि यह सारा षड्यन्त्र दलित वर्ग को सवर्णों से पृथक् करके उनके खिलाफ भड़काने और राजनीतिक लाभ प्राप्त करने के लिए ही रचा गया था। हालांकि अपने-अपने समुदायों के हितों की खातिर संगठित होना अनुचित नहीं किन्तु वहां भी राष्ट्रहित को अधिमान देना जरूरी है, क्योंकि राष्ट्रहित सर्वोपरि है और सबसे बड़ा राष्ट्रहित विभिन्न समुदाय एवं वर्गों की पारस्परिक एकता में ही निहित है।

# वैज्ञानिक की विनम्रता

महान वैज्ञानिक चंद्रशेखर वेंकटरमन हर नई जानकारी पाने के लिए हर क्षण तत्पर रहा करते थे। वैज्ञानिक खोज में लोकप्रियता प्राप्त करने के बावजूद वह विनम्रता की साक्षात मूर्ति थे। एक दिन एक युवा डॉक्टर उनसे भेंट करने आया। श्री चंद्रशेखर ने डॉक्टर को रंग और दृष्टि के संबंध में अपनी खोजों की जानकारी दी। युवक ने कहा, 'आप तो देश के अग्रणी वैज्ञानिकों में से एक हैं। मैं आज आप जैसी विभूति के दर्शन कर धन्य हो उठा हूं।' श्री वेंकटरमन बोले, 'भईया, भौतिक शास्त्रीय पहलू पर ही मैं कुछ खोज कर पाया हूं। शारीरिक क्रिया से संबंधित जानकारी तो आपको ज्यादा है। मैं चाहता हूं कि जब आपके पास समय हो, मुझे कुछ जानकारी दें।' युवक चिकित्सक ने कहा, 'आप जब आदेश देंगे, मैं आपके पास आ जाऊंगा।' वेंकटरमन विनम्रता से बोले, 'नहीं, भईया, गुरू को सीखने के लिए बुलाना उचित नहीं है। सीखने वाले का कर्तव्य है कि वह गुरू के यहां जाकर सीखे।' युवक डॉक्टर एक महान वैज्ञानिक की विनम्रता देखकर हतप्रभ हो उठा।❖

# अस्पृश्य कौन है

भगवान बुद्ध सभा में प्रवचन कर रहे थे। सभा भवन में अपने इने-गिने शिष्य ही उपस्थित थे। वह उन्हें सदाचार का महत्व समझा रहे थे। हमेशा क्रोध व आडंबर से दूर रहने का उपदेश दे रहे थे।

अचानक कमरे से बाहर खड़े किसी व्यक्ति के चीखने की आवाज सुनाई दी। वह जोर-जोर से क्रोध में बोल रहा था, 'बुद्ध पक्षपात से ग्रस्त हैं। कुछ विशेष चाटुकारों को ही अपने पास बैठाकर उपदेश करते हैं। मुझे अंदर क्यों नहीं आने दिया जा रहा?' भगवान बुद्ध ने नेत्र बंद किए तथा विचारमग्न हो गए। इसी बीच एक शिष्य ने कहा, 'भगवन्, उसे अंदर आने की अनुमति दीजिए।'

बुद्ध बोले, 'वह अस्पृश्य है, अछूत है, यहां आएगा, तो वातावरण गंदा हो जाएगा।' शिष्य ने कहा, 'आप तो जाति-पाति के विरोधी हैं। फिर उसे अस्पृश्य क्यों कह रहे हैं?' भगवान बुद्ध ने कहा, 'अस्पृश्य जाति के कारण नहीं होता है। आज वह क्रोध के कारण अस्पृश्य बन गया है। जब उसका क्रोध शांत हो जाएगा, तब वह सत्संग में बैठने का अधिकारी बन पाएगा।' शिष्यगण समझ गए कि भगवान की दृष्टि में क्रोध, हिंसा आदि से ग्रस्त ही अस्पृश्य है। ❖

# एकाग्रता की शक्ति

एक बार स्वामी विवेकानंद जी मेरठ आए। उनको पढ़ने का खूब शौक था। इसलिए वे अपने शिष्य अखंडानंद द्वारा पुस्तकालय में से पुस्तकें पढ़ने के लिए मंगवाते थे केवल एक ही दिन में पुस्तक पढ़कर दूसरे दिन वापस करने के कारण ग्रंथपाल क्रोधित हो गया। उसने अखंडानंद से कहा कि 'रोज-रोज पुस्तकें बदलने में मुझे बहुत तकलीफ होती है। आप ये पुस्तकें पढ़ते हैं कि केवल पन्ने ही बदलते हैं?' अखंडानंद ने यह बात स्वामी विवेकानंद जी को बताई तो वे स्वयं पुस्तकालय में गए और ग्रंथपाल से कहा: 'ये सब पुस्तकें मैंने मंगवाई थीं, सब पुस्तकें मैंने पढ़ी हैं। आप मुझसे इन पुस्तकों में से कोई भी प्रश्न पूछ सकते हैं।' ग्रंथपाल को शंका थी कि पुस्तकें पढ़ने के लिए, समझने के लिए तो समय चाहिए, इसलिए उसने अपनी शंका के समाधान के लिए स्वामी विवेकानंद जी से बहुत सारे प्रश्न पूछे। विवेकानंद जी ने प्रत्येक प्रश्न का जवाब तो ठीक दिया ही, पर ये प्रश्न पुस्तक के कौन से पृष्ठ पर हैं, वह भी तुरंत बता दिया। तब विवेकानंद जी की मेधावी स्मरणशक्ति देखकर ग्रंथपाल आश्चर्यचकित हो गया और ऐसी स्मरणशक्ति का रहस्य पूछा। स्वामी विवेकानंद ने कहा: 'पढ़ने के लिए जरूरी है एकाग्रता और एकाग्रता के लिए जरूरी है ध्यान, इंद्रियों का संयम।' बच्चों को किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए रोज ध्यान और त्राटक का अभ्यास करना ही चाहिए।❖

# मन-मंदिर प्रभु आप बसौ

-कुमार मयंक

मन के मंदिर में यदि अपने प्रभु को बसा लिया जाए तो तय मानिए कि दुर्दिन, भय और दुर्गुण दूर होने लगेंगे। प्रेम, भक्ति, सद्भाव और संतोष स्वभाव में उतरने लगता है। जीवन आनंदमय हो जाता है। बशर्ते हम सच्ची श्रद्धा से अपने मन को मंदिर अर्थात् पावन और पवित्र बनाएं। यही बात विश्व के सारे धर्म, ग्रंथ और महापुरूष हमें सिखाते हैं। यही हम प्रार्थना करते हैं। आरती स्तुति, वंदना, भजन व मंत्र आदि का सार भी यही है। मन का भरोसा ही आत्म बल है। यदि आत्म विश्वास टूट गया तो समझो सब कुछ छूट गया। इसलिए मन में प्रभु का बसेरा होना अनिवार्य है। यही एक सच्चा सहारा है कि परमात्मा हमारा है। सर्वोच्च सत्ता के समीप रहने से अपार शांति और अद्भुत शक्ति मिलती है। इस संपूर्ण सृष्टि का रचयिता व नियंता अथाह और अनंत है। वह प्रत्यक्ष रूप में भले ही दिखाई न दे, किंतु वायु, वेग, विद्युत ऊर्जा और तरंगों के रूप में उसका अनुभव किया जा सकता है। मन और परमात्मा दोनों दिखाई नहीं देते। ऐसा नहीं है कि जो हमें दिखाई न दे, उसका वजूद ही नहीं है। न देख पाना तो हमारी कमजोरी है। दृष्टि, शक्ति, सीमा, सामर्थ्य और अपात्रता है।

पता लगाए कि अन्नत जीवन परमेश्वर के साथ कैसे व्यतीत किया जाता है

भगवान का दीदार तो मन की आंखों से किया जाता है। तन की आंखें तो मात्र बाहरी जगत देखती हैं। यदि अंत: करण में सबको देखने वाली उसकी छवि बस जाए तो देखने दिखाने का झंझट ही मिट जाता है। ईश्वर से रूबरू होने के लिए पात्रता चाहिए। श्रद्धा, भक्ति और ज्ञान, ध्यान, योग आदि सब उसे विकसित करने के उपाय हैं इनसे वही शक्ति मिलती है, जिसे पाने की हम विनती करते हैं। 'मन को इतनी शक्ति देना मन विजय करे। दूसरों की जय से पहले खुद को जय करें।' यह जो खुद को जीतने की लड़ाई है। यही असली विजेता बनाती है। यह मन के धरातल पर लड़ी जाती है। यही आत्मोत्कर्ष है। यदि हमारे मन में भगवान बसे हों तो इस युद्ध की जरूरत ही नहीं पड़ती है। जहां भगवान हैं वहां अज्ञान कैसा? वहां तो ज्ञान, प्रकाश, प्रेम, शांति, सुख और आनंद की वर्षा होती है। बशर्ते हमारा मन, भगवान का मंदिर बना रहे और हमारे प्रभु की मूरत उस मंदिर में हो। जब ईश्वर मन मंदिर में बस जाता है तो जीवन धन्य हो जाता है। सच्चे संत, महात्मा, सिद्ध और योगी इस परम स्थिति में आ जाते हैं। उनके चेहरे पर एक नूर बरसता है। दिव्य आभा छा जाती है। कथनी और करनी का भेद मिट जाता है।

प्रत्येक जीव में वही नजर आता है जो इस पूरी दुनिया को चलाता है। हर कार्य और उसके फल में उसकी मर्जी महसूस होती है। सारे विरोध और असंतोष समाप्त हो जाते हैं। भेदभाव, द्वेष, बैर, अहंकार, क्रोध और स्वार्थ मिट जाते हैं। ज्ञानचक्षु खुल जाते हैं। इसी को उसकी कृपा कहते हैं। यही ईश्वर को जानना है, यही उसकी समीपता है। वह हमारे इतना करीब हो कि वह और हम एक हो जाएं यानी प्रभु हमारे मन में बस जाए। सारी सृष्टि ही उसकी है। कण-कण में वही बसा है। फिर भी हम मंदिर, मस्जिद, चर्च और गुरूद्वारों आदि को उसका घर मानते हैं। जब तक हमारा मन उसके लिए अपने द्वार नहीं खोलता तब तक हम मृग बने दौड़ते रहते हैं। कस्तूरी खोजते रहते हैं। तरह-तहर के ढोंग, पाखंड और आडंबरों में लगे रहते हैं। जो सर्वज्ञ है, उसे बताते हैं। जो सब जानता है, उसे सुनाते हैं। जिसे कभी कुछ नहीं चाहिए, उसे देने का प्रयास करते हैं।

जो मान-अपमान, हर्ष और विषाद से परे है, उसे प्रसन्न करते हैं। केवल इसलिए कि उसकी कृपा हम पर हो जाए। हमारे कष्ट मिट जाएं और हमारी कामनाएं पूरी हों जा जाएं। इस कारण विभिन्न तरीके अपनाए जाते हैं। जो आध्यात्म के मार्ग पर चलकर आत्मिक उन्नति चाहते हैं, उनके लिए एक सरल उपाय यह भी है कि हम अपने मन में उसे बसा लें। उसे अपना पड़ोसी ही नहीं सर्वेसर्वा बना लें। घर-परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्य और सारे दायित्व निभाते हुए भी हम अपने प्रभु को अपने मन में बसा सकते हैं।❖

# भीमा कोरेगांव (महाराष्ट्र) में जातीय हिंसा के निहितार्थ

-डॉ. उमेश कुमार पाठक

अनेकता में एकता भारतीय संस्कृति की मूल पहचान है। अपना देश दरअसल तमाम विविधताओं को आपस में समेटे हुए है। आज अपना राष्ट्र बहुमुखी विकास के क्रम में हर रोज नए कीर्तिमान गढ़ रहा है, जिसकी अनुगूंज निश्चित रूप से चहुंओर सुनाई दे रही है। जैसा कि हम सभी इस तथ्य से भलीभांति अवगत हैं कि एक विकसित या विकासशील राष्ट्र का मूल्यांकन केवल भौतिक संसाधनों की उपलब्धि अथवा आर्थिक विकास के आधार पर नहीं किया जा सकता है, अपितु उसकी सामूहिक लोकचेतना व जनशक्ति का होना भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। क्योंकि, शत्रुओं से राष्ट्र की बाह्य सीमाओं की सुरक्षा तो हमारे सैनिक करते हैं, लेकिन सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक आदि मामलों में आंतरिक सद्भाव बनाए रखने का महान् दायित्व हम सब भारतीयों का है। इस आलोक में 02 जनवरी 2018 को भीमा कोरेगांव में विजय पर्व के दौरान एक व्यक्ति की मौत के उपरांत की आंतरिक घटनाएं बेहद चिंताजनक हैं। उदाहरण के तौर पर कुछ संगठनों ने महाराष्ट्र बंद का आह्वान किया जिसके कारण मुंबई सहित प्रांत के अन्य जिलों में जनजीवन बहुत प्रभावित हुआ। इस दौरान अनेक जगहों पर हिंसक घटनाएं भी हुई।

सार्वजनिक संपत्तियों को क्षति पहुंचाई गई। इतना ही नहीं, देश की आर्थिक राजनीति मुंबई की जीवन रेखा लोकल ट्रेन को विरार, मलाड, गोरेगांव और ठाणे में कुछ समय के लिए रोक दिया गया, जिसके चलते आम लोगों को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। लेकिन इस पूरे मामले को समाज के तथाकथित ठेकेदारों ने देखते-देखते जातीय रंग दे डाला। वामपंथी संगठनों ने तो इसे दलितों पर अत्याचार करार देते हुए 'महाराष्ट्र बंद' का पूरा समर्थन किया। इतना ही नहीं, बहुजन समाज पार्टी प्रमुख मायावती ने इस जातीय हिंसा को भारतीय जनता पार्टी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की साजिश घोषित करते हुए जातिवादी ताकतों का एक षड्यंत्र माना है जो यह नहीं चाहते हैं कि दलित, सम्मान व गर्व के साथ अपनी जिंदगी व्यतीत करें। मायावती की दृष्टि में यह पूरी घटना दरअसल प्रायोजित है, क्योंकि हिंसा जानबूझ कर कराई गई है। इसके साथ ही समाज के तथाकथित बुद्धिजीवियों की भी एक ऐसी जमात है जो इस घटना की पड़ताल किए बिना जातीय रंग देने में लीन है।

कोई भी घटना एकाएक नहीं घटती है। महाराष्ट्र प्रकरण के मूल में दरअसल दो ही संदर्भ दिखते हैं-पहला, सामाजिक संदर्भ और दूसरा, राजनीतिक। पहले संदर्भ की व्याख्या सरल है। कहना गलत न होगा कि हमारा भारतीय समाज सदियों से एक समेकित समाज है। विभिन्न जाति व धर्म के लोग एक साथ आनंदपूर्वक रहते आए हैं। ऐसे में यदि हमारे समाज के बंधुओं पर किसी प्रकार का अत्याचार किया जाता है, उनके वजूद को ठेस पहुंचाई जाती है अथवा उनकी घोर उपेक्षा की कोशिश की जाती है तो इस कृत्य को किसी भी सभ्य समाज के लिए निंदनीय ही नहीं, अपितु घृणित, अनैतिक व अव्यावहारिक ही माना जाएगा। ध्यातव्य है कि भारतीय संस्कृति और हिंदू जीवन-दर्शन में भी जातिगत ऐसी विकृत मान्यताओं की घोर निंदा की गई है। न्याय दर्शन के अनुसार जाति का लक्षण है- 'समान प्रसवात्मिका जाति' यानी कि जिसके जन्म लेने की विधि और प्रसव समान हो, उनकी जाति एक ही होती है। महर्षि

कपिल के अनुसार 'मनुष्यश्चैकविधि' अर्थात् मनुष्य में जन्म लेने की एक विधि है। और, इससे संपूर्ण पृथ्वी पर एक कुटुम्ब की भावना चरितार्थ होती है। चूंकि, हम सभी भारत माता के पुत्र हैं। अत: प्राकृतिक रूप से समता को प्राप्त विषमता रहित बंधुत्व ही हमारा मूल जीवन-दर्शन है। और, इसमें किसी भी प्रकार के वैमनस्य की कोई गुंजाइश नहीं है। भक्ति साहित्य के श्रेष्ठतम कवि नरसी मेहता के अनुसार हम सभी भगवद्भक्त हैं और भगवद्भक्तों की कोई जाति नहीं होती। इस प्रकार समरसतापरक चिंतन ही हमारी भारतीय संस्कृति का द्योतक है। इस विराट संस्कृति और चेतना से आलोकित भारतीय समाज में जातीय उन्माद भला कितनी देर तक ठहर सकता है, यह सचमुच चिंतन का विषय है। चूंकि, सनातन धर्म यानी कि हिंदू समाज को विभिन्न जाति व समुदायों में बांटकर अंतत: समाज व राष्ट्र को बांटने वाली विनाशकारी आसुरी शक्तियां आज भी जीवित हैं। धर्म और जाति के नाम पर लोगों को गुमराह करने का स्वघोषित राजनीतिक हथियार ग्रहण कर भारत का तथाकथित समाजसेवी व सेक्युलर वामपंथी वर्ग अपने आप को ही दलित बंधुओं का संरक्षक घोषित कर बैठा है और, वे समय-समय पर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता व समता के अधिकार की दुहाई देकर पूरे समाज को बांटने की घृणित राजनीति करने से भी बाज नहीं आते। इस संदर्भ में 'महाराष्ट्र की जातीय हिंसा' के राजनीतिक मायने अवश्य परिलक्षित होते हैं।

भारतीय जन ने अपना प्रचंड जनादेश देते हुए केंद्र में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में अपना पूरा विश्वास अभिव्यक्त किया। इतना ही नहीं, नरेन्द्र मोदी के करिश्माई नेतृत्व की बदौलत लोकसभा चुनाव 2014 के बाद भारतीय जनता पार्टी एक-एक करके अन्य प्रांतीय विधानसभा चुनावों में भी अभूतपूर्व सफलता हासिल करती रही। अभी हाल ही में गुजरात और हिमाचल प्रदेश में विधानसभा के चुनाव हुए जहां विपक्ष की अनेक कुटिल रणनीति के बावजूद भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी। और, पूरा का पूरा विपक्ष एक बार फिर औंधे मुंह गिरा। समकालीन भारतीय राजनीतिक परिवेश में अब विपक्ष की सारी रणनीति फेल हो गई है। जाति व धर्म के नाम पर उनके वोट की राजनीति कहीं-न कहीं फीकी पड़ गई है। उनको यह हकीकत पल्ले नहीं पड़ रही है कि कैसे (तथाकथित) हिंदू सांप्रदायिक दल 'भारतीय जनता पार्टी' को आमजन ने अपना प्रचंड जनादेश दे दिया है, क्योंकि भारत में धर्मनिरपेक्षता का ठेका तो उन्हीं का है। अब सोचिए, ऐसे हालात में भारत के तथाकथित धर्मनिरपेक्ष दल (कांग्रेस सहित वामपंथी) करें तो क्या करें। आखिर अपने मूल स्वभाव के अनुसार विपक्षी दलों ने एकजुट होकर महाराष्ट्र की जातीय हिंसा को राजनीतिक रूप दे डालने में तनिक भी देर नहीं की। लेकिन, वे भूल जाते हैं कि एक सौ पच्चीस करोड़ की आबादी, अनेक धर्म-संप्रदाय, भाषा, वेश-भूषा और रहन-सहन में घोर असमानता, फिर भी एक अखंड राष्ट्र। कहना गलत न होगा कि घोर आश्चर्य करने वाली इस एकता में है- 'भारतीय संस्कृति और विराट हिंदू जीवन दर्शन के तत्व यानी कि धार्मिक सद्भाव, सामाजिक समरसता एवं बंधुत्व का अनूठा मिश्रण'।

समवेतत: भारतीय सनातन सभ्यता और हिंदू जीवन दर्शन के ये समस्त गुण ऐसे हैं जो राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए परमावश्यक हैं। समस्त विश्व में एकता, धार्मिक और सामाजिक समरसता का ऐसा अलौकिक उदाहरण कहीं अन्यत्र नहीं दिखता है। परंतु, महाराष्ट्र की जातीय हिंसा के विवेचनार्थ, भारतीय सांस्कृतिक इतिहास और वर्तमान के जो ज्ञाता हैं, वे भलीभांति जानते हैं कि भारतीय सामाजिक समरसता की प्रक्रिया में अभी भी कुछ अवांछित छिद्र अवश्य हैं जो कि भरे नहीं हैं। कुल मिलाकर महाराष्ट्र में जातीय हिंसा के बहाने भारतीय समाज की विनाशकारी शक्तियां उसी छिद्र में अपना भविष्य तलाश रही हैं। हमें उस छिद्र को यथाशीघ्र भरना होगा। और इसके लिए हमें सामाजिक सद्भाव लाकर समाज को एकजुट करना एवं पारस्परिक भेदभाव को दूर करना होगा। वैसे भी यह कार्य किसी एक व्यक्ति अथवा संस्था का नहीं है, इसके लिए संपूर्ण भारतीय समाज के सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है। ❖ **लेखक क्षेत्रीय अध्ययन केन्द्र, धर्मशाला में अध्यापनरत हैं।**

# फसाद की जड़

-अरविन्द कुमार

2018 का आरम्भ हुआ ही था। एक जनवरी को कोरेगांव में दंगे भड़क गए। दंगों के लिए महाराष्ट्र सरकार के गृह विभाग ने जिग्नेश मेवाणी और उमर खालिद के उकसाऊ भाषणों को कारण माना है। इनमें से उमर खालिद के भारत तोड़ने के सपने जग जाहिर हैं। इन दोनों के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धारा 153 ए ( धर्म के आधार पर विभिन्न समूहों के बीच दुश्मनी को बढ़ावा देने), 505 और 117 के तहत मामला दर्ज किया गया है। दो और लोगों के खिलाफ भी पुलिस में शिकायत हुई है, संभाजी भिड़े व मिलिंद एकबोटे पर सिक्रापुर पुलिस स्टेशन में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति अधिनियम के तहत आरोप लगाए गए हैं। कोरेगांव शिक्रापुर स्टेशन के अधिकार क्षेत्र में ही आता है। इन दोनों के खिलाफ बहुजन रिपब्लिकन सोशलिस्ट पार्टी के एक सदस्य सामाजिक कार्यकर्ता अनील रविन्द्र साल्वे (39) ने शिकायत दर्ज की थी।

एक जनवरी के दंगों में कोरेगांव में एक नवयुवक की जान चली गई। सोशल मीडिया और मीडिया में वामपंथी मशीनरी से प्रसारित हुआ कि कोरेगांव में सवर्णों/मनुवादियों/मराठों द्वारा एक दलित की हत्या कर दी गई। देखते ही देखते मुंबई और ठाणे जैसे शहरों के साथ-साथ पूरे महाराष्ट्र में खबर आग की तरह फैल गई। अगले दो दिन तक खूब तोड़ फोड़ हुई हुई। बाद में टाइम्स ऑफ इंडिया में उस नवयुवक के मराठा होने की खबर छपी।

फसाद की जड़ में कोरेगांव में अंग्रेजों द्वारा बनवाया गया एक स्मारक था। दरअसल जनवरी 1818 में पेशवा बाजीराव द्वितीय ने पुणे को अंग्रेजों से छुड़ाने के लिए चढ़ाई की थी। रास्ते में पेशवाओं की सेना का सामना अकस्मात् अंग्रेजों की सेना से हुआ जो कि पुणे जा रही थी। पेशवाओं ने पूरी रात अंग्रेजी सेना का सामना किया और सुबह होने पर पेशवाओं की सेना वापस हट गई। बात यह थी कि पेशेवाओं को अंग्रेजों की बड़ी साहयक सेना के आने की सूचना मिली थी। ईस्ट इंडिया कंपनी को जान और माल का बहुत नुकसान उठाना पड़ा था। ऐसा बिलकुल नहीं था कि पेशवाओं ने आत्मसमर्पण किया हो या उनकी सेना हार गई हो या यह युद्ध पेशवाओं और महारों के बीच हुआ हो। हां! अंग्रेजों के कई विवरणों में पेशवाओं के सामने उनकी बुरी हालत का जिक्र जरूर मिलता है।

ये इतिहास है, और हम भारतीयों के इतिहास को झूठा बनाने का काम अंग्रेजों ने बखूबी किया है। इस बात से कोई अनभिज्ञ नहीं। 1818 में कोरेगांव में ईस्ट इंडिया कंपनी ने पेशवाओं पर तथाकथित जीत हासिल की याद में अंग्रेजों ने कोरेगांव में एक युद्ध स्मारक बनवाया था। इस स्मारक पर उन महार योद्धाओं के नाम लिखे हैं जो अंग्रेजों की तरफ से लड़ते हुए शहीद हो गए थे।

अंग्रेजों के बाद से ही भारत के कम्युनिस्ट इसको महारों की ब्राह्मणों पर जीत या मनुवादियों पर जीत बता कर अपना उल्लू सीधा करते आए हैं। 200 वर्ष पूर्व हुई इस घटना का इस्तेमाल वामपंथियों ने हमेशा से समाज में द्वेष

फैलाने के लिए किया। इन दंगों को भी दलित बनाम स्वर्ण, दलित बनाम ब्राह्मण और यहां तक कि दलित बनाम हिन्दू दंगों का नाम भारतीय मीडिया के साम्यवादी तत्वों द्वारा दिए जाने के प्रयास अभी भी जारी हैं।

महाराष्ट्र सरकार ने दंगें सोशल मीडिया द्वारा भड़काए जाने की बात कही है। भाजपा के बड़े नेता सुब्रमण्यम स्वामी ने कहा कि दलितों के तथाकथित नेताओं को पेशवाओं और मराठों के बारे में सही इतिहास सीखना चाहिए। उन्होंने कहा कि ब्राह्मणों और महारों के बीच कभी कोई शत्रुता नहीं थी क्योंकि अम्बेडकर के शिक्षक एक ब्राह्मण थे और उनकी दूसरी पत्नी भी ब्राह्मण थी।

निश्चित रूप से इस तरह के प्रायोजित और योजनाबद्ध जातीय विद्वेष फैलाने की घटना भारतीय सामाजिक समरसता के लिए बहुत घातक है। महाराष्ट्र की घटना से हुए नुकसान की भरपाई होने में अभी देर लगेगी। दु:खद बात होगी यदि 2019 में लोकसभा के चुनाव को ध्यान में रखकर इस तरह की कुत्सित और घातक चालें चली जा रही हों। 2019 कांग्रेस नहीं जीतेगी उसके नेताओं को पता है पर बीजेपी की सीट को कम से कम करने की उनकी एक रणनीति में दलित-मुस्लिम का गठजोड़ सबसे बड़ी उम्मीद है। इस गठजोड़ ने नारा दिया है ''जय भीम, जय मीम''। कोरेगांव में इस नारे का सुना जाना क्या मात्र एक इत्तेफाक हो सकता है?

फेसबुक का एक पेज है ''भीमा कोरेगांव शौर्य दिन प्रेरणा अभियान''। एक जनवरी के कार्यक्रम को लेकर वामपंथियों की मेहनत का लेखा-जोखा इस फेसबुक पेज पर उन्हीं के द्वारा डाला हुआ है। इस पेज पर मौलाना अब्दुल हमीद अजहरी, जो कि आल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के राष्ट्रीय सचिव हैं, का एक वीडियो प्रकाशित हुआ है। इस वीडियो में वह दलितों को संबोधित करते हुए साफ कह रहे हैं- 'जनांदोलन खड़ा करना चाहिए, कोहराम मचा दो, हंगामा करो'। साफ है कि सामाजिक रहनुमाओं को अब अपनी जिम्मेदारी निभाने के लिए बदली परिस्थितियों के हिसाब से खुद को तैयार करना होगा।❖

## रचनाकारों के लिए सूचना

यह बड़े सौभाग्य का विषय है कि आप सब के सहयोग से मातृवन्दना पत्रिका अपने प्रकाशन के 25वें वर्ष में प्रवेश कर रही है। वर्ष प्रतिपदा 2018 के अवसर पर पत्रिका के नियमित प्रकाशन के 25वें वर्ष में रजत जयंती पर 'हिमाचल गौरव' विशेषांक प्रकाशित किया जाएगा। अपने प्रदेश के कृषि, बागवानी, शिक्षा, कला, संस्कृति, समाज सेवा, खेल, उद्योग आदि क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान सम्बंधी लेख व कविताएं प्रकाशित की जाएंगी। अत: लेखकों व कवियों से अनुरोध है कि अपनी स्वरचित रचनाएं 28 फरवरी तक मातृवन्दना संपादकीय कार्यालय में भेज दें। नियत तिथि के बाद प्राप्त रचनाओं पर विचार नहीं किया जाएगा। विषय के अनुकूल प्राप्त रचनाओं को संपादक मण्डल की सहमति से ही प्रकाशित किया जाएगा।

**SHIVALIK HOSPITAL**
**Near Police Lines, Jhalera, Una (H.P.)**
**Mob.: 98059-33644**
**Dr. Akshay Sharma**
MBBS (MAMC Delhi) (Gold Medalist)
MS (MAMC Delhi) Regd. MCI-7841
General & Laproscopic Surgeon
Ex. Senior Registrar LNJP &
GB Pant Hospital New Delhi
**Dr. Anupma Sharma**
MBBS, MD (PGI Chandigarh)
**SKIN SPECIALIST**
Regd. PMC-28190
**Facilities Available:** General & Specialist OPD, Indoor Admission Facilities, Fully equipped Operation Theatre, All Major & Minor Operations, Laproscopic Gall bladder Removal, Nebulization therapy for Asthma, ECG/X-Ray, Blood Tests.

# धर्मान्तरण के खिलाफ विहिप का ज्ञापन

विश्व हिन्दु परिषद और बजरंग दल के कार्य कर्ताओं ने आज शिमला में उपायुक्त शिमला के माध्यम से राज्यपाल को पालमपुर में हुए धर्मान्तरण के खिलाफ, दोषियों के खिलाफ कड़ी कारवाई करने हेतु ज्ञापन दिया। ज्ञात हो कि पिछले दिन पालमपुर क्षेत्र के एक गांव में इसाई मिशनरियों ने एक ही गांव के 50 से अधिक लोगों का धर्मान्तरण किया था, जिसके बाद हिन्दूवादी संगठनों में गुस्से की लहर है। उक्त जानकारी बजरंग दल जिला शिमला के जिला संयोजक नरेश देस्टा ने प्रैस को जारी एक वक्तव्य में दी।

बजरंग दल प्रांत संयोजक राजेश शर्मा ने कहा कि पिछले लम्बे समय से प्रदेश में धर्मान्तरण की गतिविधियों में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। प्रदेश के भोले-भाले हिन्दुओं को पैसे के बल और सेवा के नाम पर धर्म परिवर्तन को मजबूर किया जा रहा है। धर्मान्तरण की गतिविधियों में रोकथाम के लिए विश्व हिन्दू परिषद् सहित अनेक हिन्दूवादी संगठन पिछले लम्बे समय से प्रदेश की पूर्व सरकार व प्रशासन के समक्ष धर्मान्तरण के मुद्दों को उठाते रहे हैं। लेकिन प्रदेश की पूर्व सरकार की ओर से इस विषय पर कड़ी करवाई करने के आश्वासन के सिवा कुछ नही मिला। जिसका परिणाम यह हुआ कि ईसाई मिशनरियां अब पूरे प्रदेश में पैसे के बल पर से खुलेआम हिन्दुओं के धर्मान्तरण के लिए सक्रिय होकर, बिना किसी डर के कार्य कर रही हैं। यह उसी का परिणाम है कि जिला कांगड़ा, तह. पालमपुर के भरमात गांव में 50 लोगों का धर्मान्तरण किया गया है।

ईसाई मिशनरियां पिछले लगभग दो दशक से प्रदेश में धर्मान्तरण के गोरखधंधों में लगी हैं। जिस पर कड़ा संज्ञान लेते हुए, 2006 में उस समय की सरकार ने धर्म स्वतन्त्रता विधेयक पारित किया था, जिसके अनुसार अगर कोई भी व्यक्ति धर्म परिवर्तन करता है, तो उसे उस सम्बंध में स्थानीय डी.सी./एस.डी.एम. को इस संदर्भ में लिखित जानकारी देनी पड़ती थी, धर्म परिवर्तन का कारण बताना पड़ता था, लेकिन लेकिन 2011 में ईसाई मिशनरियों ने हिमाचल उच्च न्यायालय में इस विधेयक को चैलेंज कर, इस विधेयक में कुछ परिवर्तन करवा दिए, जिस कारण से प्रदेश में ईसाईयों द्वारा धर्मान्तरण की गतिविधियों में आश्चर्य जनक तरीके से बढ़ोत्तरी हुई है। प्रदेश की पूर्व राज्य सरकार की ओर से धर्मान्तरण के मुद्दों को गंभीरता से नही लिया गया, जिसका परिणाम यह हुआ की देव भूमि में ईसाई मिशनरियां पैसे के बल पर हिन्दुओं के धर्मान्तरण में सक्रिय होकर कार्य कर रही हैं।❖

# राष्ट्र सेविका समिति का परिचय वर्ग

राष्ट्र सेविका समिति हि.प्र. का सेविकाओं के लिए परिचय वर्ग करने की योजना हुई है। जिसमें प्राप्त जानकारी के अनुसार अभी तक आयोजित वर्गों में उपस्थिति इस प्रकार से रही:- चंबा-45, परवाणू-24, नाहन-30, ऊना-17, नालागढ़-19, हमीरपुर-86, कांगड़ा-31, बातल-54, बिलासपुर-31, इस प्रकार इन वर्गों में 337 सेविकाओं की उपस्थिति रही। अभी कुछ स्थानों पर और वर्गों की योजना है। इन परिचय वर्गों में सेविका समिति के प्रांत स्तरीय कार्यकर्तृयां उपस्थित रहीं। उल्लेखनीय रुप से श्रीमती कमलेश शर्मा (सह-प्रांत संचालिका), डॉ. मुक्ता ठाकुर (प्रांत-कार्यवाहिका), श्रीमती स्नेहलता (प्रांत-बौद्धिक प्रमुख) कार्यक्रमों में उपस्थित रहीं। ❖



स्थान संख्या

# वामपंथी संगठनों के केरल में बढ़ रहे हमले

शिमला (वि.सं.कें.) केरल में वामपंथी संगठनों द्वारा राष्ट्रवादी संगठनों पर लगातार हमले हो रहे हैं। राष्ट्रभक्ति रखने वाले लोगों की हत्याओं का सिलसिला कम होता नहीं नजर आ रहा जिससे यह साफ हो जाता है कि केरल की सरकार ने इन मामलों पर चुप्पी साधकर उनको एक तरह से खुली छूट दे रखी है। यह विचार अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् की प्रांत मंत्री हेमा ठाकुर ने धरना प्रदर्शन के दौरान व्यक्त किये। एबीवीपी ने केरल के कन्नूर में हुई हत्या और लगातार हो रही हिंसा के विरोध में उपायुक्त कार्यालय शिमला के बाहर धरना प्रदर्शन किया। इस प्रदर्शन की अगुवाई एबीवीपी की प्रांत मंत्री हेमा ठाकुर द्वारा की गयी जिसमें संगठन के कार्यकर्ताओं ने भारी संख्या में भाग लिया। इस प्रदर्शन के दौरान कार्यकर्ताओं ने हिंसा के विरोध में जमकर नारेबाजी की।

हिंसा रोकने के प्रभावी कदम उठाने और अभी हुई हत्या की जांच एनआईए से करवाने के लिए केंद्र सरकार से मांग भी की। प्रांत मंत्री ने कहा कि देश का दुर्भाग्य है कि वामपंथी हमेशा देश को तोड़ने का मंसूबा पालते हैं और देश को यह सब देखना पड़ता है। उनका कहना था कि देश में चाहे देश विरोधी नारे की बात हो या जेएनयू जैसे प्रकरण इन सबसे यह बिल्कुल साफ है कि वामपंथ देश को तहस-नहस कर देना चाहता है। हेमा ठाकुर ने कहा कि केरल लाल आतंक का गढ़ बन गया है जिसमें लगातार हिंसा की घटनाओं के समाचार आ रहे हैं इससे लगता है कि वहां पर आम लोगों को दहशत में जीने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। उन्होंने लोकतंत्र की खुलेआम हो रही हत्या को देश के लिए खतरनाक बताया। एबीवीपी के राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति के सदस्य आशीष सिक्टा ने कहा कि प्रदर्शन को और तेज किया जायेगा और केरल में जारी राजनीतिक हत्याओं की जांच के लिए एनआईए से जांच की मांग की जायेगी। उनका कहना था कि केरल में मानव अधिकारों की खुले आम धज्जियां उड़ाई जा रही है जिससे वहां सामान्य नागरिक का जीवन बेहद मुश्किल हो गया है। उन्होंने कहा कि केरल में हत्याओं का सिलसिला रूकना चाहिए ताकि मानवाधिकारों की रक्षा हो पाये। इस प्रदर्शन में एबीवीपी की शहरी और विश्वविद्यालय इकाई के अतिरिक्त बड़ी संख्या में संगठन के कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।❖


Dr. Hem Raj Sharma

Specialist in Kshar Sutra Therapy
(Piles, Fistula, Anal Polyps, Prolapse Rectum, Pilonidal Sinus)
Formerly Incharge Medical Officer,
DAH Una, Govt. of Himachal Pradesh
NATIONAL CHIKITSAK GURU

RAV (National Academy of Ayurved) New Delhi
Under Ministry of Health & Family Welfare, Deptt. of Ayush, Govt. of India.
B.Sc. HPU Shimla, GAMS, MD, University Rohtak, PGD Health & Family welfare, Punjab Uni. Chandigarh CC. Yog & Naturalpathy, Gujrat University, Jamnagar, CRAV Kshar-Sutra Specialisation, New Delhi

"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः"

JAGAT HOSPITAL
&
Kshar Sutra Centre

Near Govt. College, Nangal Road, Una (H.P.)
Pin : 174303
94184-88660, 88940-68358, 94593-88323

## आचार्य देवव्रत ने दी सांसदों को जैविक खेती की जानकारी

राज्यपाल आचार्य देवव्रत चार जनवरी को लोकसभा व राज्यसभा सदस्यों को प्राकृतिक कृषि के बारे में जानकारी दी। स्पीकर रिसर्च इनिशिएटिव (एसआरआइ) द्वारा आयोजित इस कार्यशाला में विशेष रूप से राज्यपाल देवव्रत को आमंत्रित किया गया। इस संबंध में लोकसभा अध्यक्ष सुमित्रा महाजन ने पत्र लिख कर राज्यपाल से सांसदों को जैविक खेती पर संबोधन देने के लिए आग्रह किया। राज्यपाल शून्य लागत प्राकृतिक कृषि को लेकर देशभर में अभियान चलाए हुए हैं। किसानों के लिए राज्यपाल ने शून्य लागत प्राकृतिक कृषि नामक पुस्तक भी प्रकाशित की है, जिसे किसानों को निशुल्क वितरित किया जा रहा है। राज्यपाल स्वयं भी गुरूकुल कुरूक्षेत्र जहां के वे संरक्षक भी हैं, वे 200 एकड़ भूमि पर कई साल से प्राकृतिक कृषि कर रहे हैं।

हिमाचल प्रदेश का राज्यपाल बनने के बाद उन्होंने पांच प्राथमिकताएं उजागर की थीं, जिनमें प्राकृतिक कृषि भी शामिल है। राज्यपाल के कार्यकाल में उन्होंने प्राकृतिक कृषि को लेकर अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। प्राकृतिक कृषि से किसानों की आय दोगुनी होने से उनकी आर्थिकी मजबूत होगी। इस पद्धति को अपनाने से जमीन की उर्वरा शक्ति बढ़ेगी और पानी की खपत भी कम होती है। इसके लिए देसी नस्ल की गाय पालना जरूरी है। ❖

## बेसहारा पशुओं से निपटने के लिए टोल फ्री नंबर

वन एवं परिवहन मंत्री गोविंद ठाकुर ने कहा है कि लावारिस पशुओं की समस्या से निपटने के लिए अब सरकार टोल फ्री नंबर जारी करेगी। इसके बाद लोग इस नंबर पर कॉल करके पशुओं को लावारिस छोड़ने वालों की सूचना दे सकते हैं। यही नहीं अगर किसी क्षेत्र में मवेशी लावारिस घूमते हुए पाए जाते हैं तो उसकी सूचना भी टोल फ्री नंबर पर दे सकते हैं। सूचना मिलने के बाद पशुपालन की टीम मौके पर पहुंच जाएगी। पशुओं को जहां उपचार दिया जाएगा, वहीं उन्हें गोसदन भेजने की भी व्यवस्था की जाएगी। इससे लोगों को लावारिस पशुओं की समस्या से निजात मिलेगी। उन्होंने कहा कि लावारिस पशुओं की समस्या दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। पूर्व कांग्रेस सरकार ने इस समस्या से निपटने के लिए कोई प्रयास नहीं किए।❖ **साभार: दैनिक जागरण**

## नए लोगो में स्वास्तिक चिन्ह

पर्यटन विभाग उ.प्र. के अनुसार नए लोगों में स्वास्तिक चिन्ह बना हुआ है और साधुओं का एक समूह पवित्र संगम में स्नान करता हुआ दिख रहा है। गौरतलब है कि हाल ही में कुंभ मेले को यूनेस्को के द्वारा विश्व धरोहरों की फेहरिस्त में शामिल किया गया है। उत्तर प्रदेश के सिनेमाघरों में जल्द ही फिल्म शुरू होने से पहले सुनाए जाने वाले राष्ट्रगान के बाद कुंभ मेले का नया प्रतीक चिन्ह (लोगो) भी अनिवार्य रूप से दिखाया जाएगा। प्रदेश के पर्यटन विभाग के प्रमुख सचिव अवनीश अवस्थी ने बुधवार को बताया कि प्रदेश के सिनेमाघरों में राष्ट्रगान के बाद कुंभ मेले का लोगो भी प्रदर्शित होगा। इसे जल्द ही अमल में लाया जाएगा। ऐसा इसलिए किया जाएगा ताकि लोग इस धर्मिक आयोजन के उद्देश्य और महत्व को जान सकें। यह निर्णय सभी सरकारी पत्रों में कुंभ का लोगो छापे जाने के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के आदेश के बाद किया गया है।❖

# 1351 करोड़ से 4 साल में बनेगा एम्स

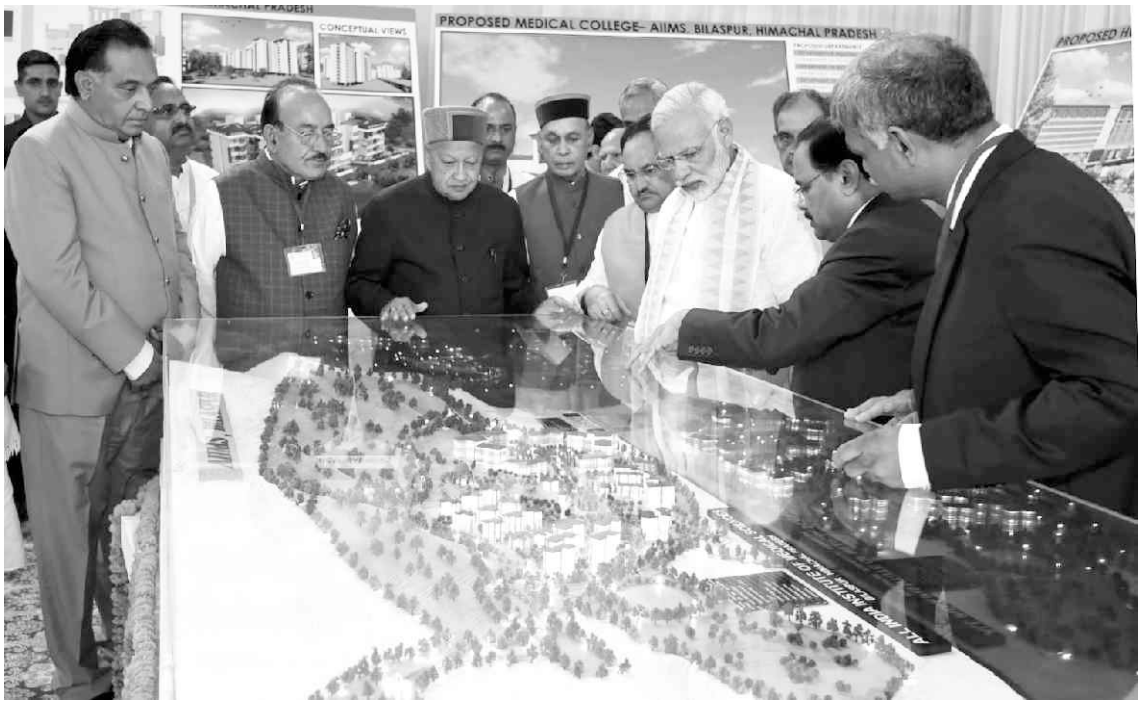


बिलासपुर के कोठीपुरा में 1351 करोड़ रूपए की लागत से एम्स का निर्माण 4 साल में कर दिया जाएगा। मोदी सरकार की कैबिनेट ने इस पर मुहर लगा दी है। तीन साल पहले मोदी सरकार ने इसकी घोषणा की थी। विधानसभा चुनावों से पहले मोदी ने बिलासपुर पहुंच कर इसका शिलान्यास किया था। कैबिनेट की मंजूरी के बाद साफ हो गया है कि 2020 के शुरू तक हिमाचल में एम्स काम करना शुरू कर देगा। इसके लिए कोठीपुरा में राज्य सरकार ने पशुपालन विभाग की जमीन एम्स के नाम कर दी है। इस काम को समय पर पूरा करने के लिए भाजपा सरकार ने भी अधिकारियों को निर्देश जारी कर दिए हैं। एम्स के बनने से राज्य में सुपर स्पेशिलिटी हैल्थ केयर की सुविधा मिलेगी। अभी राज्य में आईजीएमसी सबसे बड़ा अस्पताल है। जिन मरीजों की हालत ज्यादा खराब होती है, उन्हें चंडीगढ़ के पीजीआई में रेफर किया जाता है। एम्स के बाद मरीजों को राज्य से बाहर रेफर करने की जरूरत नहीं होगी।

**एम्स में ये होंगी सुविधाएं:-**

- 750 बेड वाले अस्पताल में ट्रॉमा सेंटर भी होगा
- एमबीबीएम का 100 छात्रों का बैच शुरू होगा
- 60 स्टूडेंट्स की क्षमता वाला नर्सिंग बैच शुरू होगा
- दिल्ली के एम्स की तर्ज पर डॉक्टरों से लेकर स्टाफ के लिए रेजिडेंशियल कॉलोनी बनेगी
- 20 स्पेशिलिटी और सुपर स्पेशिलिटी वार्डों के साथ 15 ऑपरेशन थियेटरों का निर्माण होगा
- 30 बिस्तरों का आयुष विभाग भी बनेगा। इसमें आयुर्वेद के परंपरागत तरीके से इलाज की सुविधाएं होंगी।

**निर्माण का टाइम शेड्यूल**

- 12 महीने प्री कंस्ट्रक्शन फेस
- 30 महीने में निर्माण कार्य पूरा होगा
- 6 महीने अस्पताल को शुरू करने में लगेंगे। ❖



**केंद्र को विदेशों से नहीं खरीदने पड़ेंगे सुरक्षा उपकरण हिमाचल-प्रदेश में होंगे तैयार**

# अंगूठा लगाओ राशन पाओ

एक जनवरी से ट्रायल बेस पर हमीरपुर सहित तीन जिलों के उपभोक्ताओं को बायोमीट्रिक सिस्टम से राशन लेने का तोहफा नए साल में मिलने जा रहा है। हमीरपुर के अलावा ऊना और मंडी जिलों में उपभोक्ताओं को इस हाइटेक सिस्टम के जरिए अंगूठा लगा कर राशन लेने की सुविधा मिलेगी। दूसरे चरण में प्रदेश के अन्य 9 जिलों में बायोमीट्रिक सिस्टम को खाद्य एवं आपूर्ति विभाग द्वारा लॉन्च किया जाएगा। संबंधित डिपुओं को इसे लेकर बायोमैट्रिक मशीनें उपलब्ध करवा दी गई हैं। उपभोक्ता को अब राशन कार्ड लेकर डिपो तक नहीं जाना पड़ेगा। खाद्य एवं आपूर्ति विभाग एक जनवरी से हमीरपुर, ऊना और मंडी तीन जिलों में ट्रायल बेस पर बायोमीट्रिक सिस्टम से उपभोक्ताओं को राशन उपलब्ध करवाएगा। इन तीनों जिलों में करीब एक हजार डिपो पर उपभोक्ताओं को इस हाइटेक सिस्टम से राशन मिलेगा। तीन जिलों को ट्रायल में इसलिए चुना गया है, क्योंकि इन सभी जिलों में 90 फीसदी से ज्यादा उपभोक्ताओं की आधार लिंकेज हो चुकी है और बायोमीट्रिक सिस्टम आधार लिंकेज के बेस पर ही काम करेगा। उपभोक्ता जब राशन लेने के लिए डिपो में जाएगा तो उसे वहां पर स्थापित की गई बॉयोमीट्रिक्स मशीन पर अंगूठा लगाने के बाद रजिस्ट्रेशन के बाद राशन उपलब्ध करवाया जाएगा।

**असमर्थ को मिलेगा मोबाइल पर पासवर्ड:** राशन कार्ड का जो मुखिया बीमारी या दूसरी किसी वजह से डिपो तक नहीं जा पाएगा, उसे उसके मोबाइल पर एक वन टाइम पासवर्ड दिया जाएगा। परिवार का कोई भी सदस्य इस पासवर्ड को डिपो होल्डर को बता कर राशन ले सकेगा। एक बार पासवर्ड डिपो होल्डर के पास देने के बाद दोबारा इसे देने की जरूरत नहीं पड़ेगी, इसी से एंट्री हो जाएगी। विभाग ने इसके लिए एक ऐप भी बनाया है, जिसे उपभोक्ता अपने मोबाइल पर डाउनलोड कर सकता है।❖

# प्रदेश के जंगलों पर अब ड्रोन से रखी जाएगी नजर

हिमाचल में वनों को बचाने के लिए वन विभाग को टेक्नोलॉजी से लैस व हाईटेक करने जा रहा है। जंगलों में अवैध कटान रोकने, आगजनी की घटनाओं का पता लगाने के लिए विभाग ड्रोन खरीदने जा रहा है। ट्रायल आधर पर शिमला, चंबा से इसकी शुरूआत की जाएगी। दो से तीन ड्रोन खरीदे जाएंगे। यदि प्रयोग सफल रहा तो अन्य जिलों के लिए भी ड्रोन खरीदे जाएंगे। अतिरिक्त मुख्य सचिव वन तरूण कपूर ने इसकी पुष्टि की है। ड्रोन का प्रयोग करने के लिए राज्य वन विभाग ने गृह विभाग और नागरिक उड्डयन मंत्रालय से अनुमति मांगी थी जो मिल चुकी है। अब रक्षा मंत्रालय से इसकी परमिशन मांगी गई है। ये ड्रोन जंगलों में लगने वाली आगजनी की घटनाओं के अलावा अवैध कटान पर नजर रखेगा। ड्रोन में लगे उच्च तकनीक के कैमरों से चप्पे-चप्पे की जानकारी मिलेगी। ड्रोन से जंगल की रूटीन मैपिंग की जाएगी। संबंधित अधिकारी इस से प्राप्त होने वाली फुटेज को गहनता से जांचेंगे। हिमाचल 37033 वर्ग किलोमीटर वनों से घिरा हुआ। है। जो कुल भू-भाग का 66 फीसदी है। 14696 वर्ग किमी. का भू भाग पेड़ों से घिरा हुआ है। 6381 वर्ग किलोमीटर पर घने जंगल हैं।❖

**सुडोकू उत्तर**

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 9 | 4 | 7 | 6 | 5 | 1 | 2 | 3 | 8 |
| 8 | 3 | 6 | 7 | 2 | 9 | 5 | 4 | 1 |
| 5 | 2 | 1 | 4 | 3 | 8 | 6 | 7 | 9 |
| 3 | 6 | 4 | 8 | 9 | 5 | 1 | 2 | 7 |
| 1 | 8 | 9 | 2 | 4 | 7 | 3 | 5 | 6 |
| 2 | 7 | 5 | 3 | 1 | 6 | 8 | 9 | 4 |
| 7 | 1 | 3 | 5 | 6 | 4 | 9 | 8 | 2 |
| 4 | 9 | 2 | 1 | 8 | 3 | 7 | 6 | 5 |
| 6 | 5 | 8 | 9 | 7 | 2 | 4 | 1 | 3 |

**उत्तर:** 1. एन नारायण मूर्ति, 2. चीन, 3. एसआर शर्मा, 4. माइक्रोसॉफ्ट, 5. सुनील अरोड़ा, 6. जमैका, 7. रो-रो, 8. 130 वां, 9. सुरेश भारद्वाज, 10. ज्येष्ठा।

# सुजानपुर टिहरा की होली

-सुनीला ठाकुर

मनुष्य जीवन को उल्लास मय और गतिमय बनाए रखने के लिए हमारे पूर्वजों ने अनेक युक्तियां प्रयोग में लाई क्योंकि भारतवर्ष में जनजीवन ग्रामीण अंचलों में ही फला-फूला। नागरी सभ्यता भारतीयों की पहली पसन्द नहीं रही है। ग्रामीणों का जीवन कृषि कर्म पर आधारित रहा है। वर्ष भर के कृषि कार्यों की थकान को दूर करने और अपने सगे-संबन्धियों से मेल-मिलाप की दृष्टि से भी अनेकों तरह के मेले, उत्सव और त्यौहार रचे गए हैं। इन उत्सवों का मुख्य उद्देश्य जीवन की एकरसता मिटाकर आनंद और सौंदर्य भरकर जीवन को गति देना है। ये उत्सव और मेले सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृति और आर्थिक आदि इनके कारणों से समाज में आयोजित किए जाते हैं। इनमें ऐसा ही मस्ती भरा पर्व है होली। यह सारे भारत वर्ष में या यूँ कहें सारे विश्व में जहाँ भी भारतवंशी निवास करते हैं, मनाया जाता है। इस त्यौहार की एक और विशेषता है कि इसे बाल-वृद्ध नारी-पुरूष, अमीर-गरीब सभी बड़े प्रसन्नचित और मस्ती भरे माहौल में मनाते हैं। यह सामाजिक सौहार्द बढ़ाने वाला त्यौहार है। इसमें अपने मन की प्रसन्नता व्यक्त करने के लिए एक-दूसरे पर रंग और गुलाल डाले जाते हैं।

फाल्गुन मास उस पर बसन्त ऋतु का नवोन्मेष चहुँ ओर छाया होता है। प्रकृति अपनी प्राकृतिक हरितिमा की चादर से हरितामय होती है। ऐसे में मनुष्य में भी नव संचार स्वभाविक है। होली का पर्व नवोन्नेष्टि यज्ञ से भी जोड़ा जाता है। भारत के ऊष्ण क्षेत्रों मे न्वान से यज्ञ कर प्रसाद ग्रहण किया जाता है। अत: उस अन्न को 'होला' कहते हैं। इससे भी इसका नाम होली पड़ा हो सकता है। लेकिन पौराणिक सन्दर्भ से यह हरिण्यकशिपु की बहन होलिका के अग्नि दहन की स्मृति में मनाया जाता है। होलिका किसी देवीय वरदान के प्रभाव से नित्य अग्नि स्नान किया करती, लेकिन वह जलती नहीं थी। हिरण्यकशिपु ने प्रहलाद को मारने के लिए होलिका को प्रहलाद के साथ अग्नि स्नान करने को कहा। लेकिन प्रहलाद का बाल भी बांका न हुआ और होलिका उसी अग्नि में भस्म हो गई। मान्यता थी कि होलिका को अकेले में अग्नि-स्नान का वरदान प्राप्त था। उसी समय से होली उत्सव मनाया जाता है।

हिमाचल प्रदेश की हरित वादियों में भी होली उत्सव बड़े उल्लास और उत्साह से मनाया जाता है। किस्म-2 के रंगों को एक दूसरे पर डाला जाता है। कई जगहों पर सूखे रंग तो कई स्थानों पर पानी मिले रंग भी प्रयोग में लाए जाते हैं। हिमाचल के हमीरपुर जिला में पड़ने वांले सुजानपुर टीहरा का होली उत्सव ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि लिए हुए है। महाराजा संसारचन्द कटोच 1775 ई. से 1823 ई. तक के शासनकाल में आयोजित होने वाले होली उत्सव का विशेष महत्व है। उसका कारण यह था कि पूजा और राजसत्ता दोनों मिलकर इस त्यौहार का आयोजन करते। विशेष बात यह थी कि राजपरिवार के साथ-साथ महाराजा-महारानियां, राजकुमार-राजकुमारियां और अन्तेवासी प्रजा के साथ होली खेलते थे। उत्सव पर आने वाला सारा व्यय राजकोष से होता था। सुजानपुर की होली की तुलना ब्रज की होली से भी की जाती थी। होली उत्सव सुजानपुर के सु-विस्तृत मैदान में मनाया जाता है। राजा की टोली कृष्ण कन्हैया और रानी की टोली को समस्त प्रजा राधा रूप में मानती थी। यह उत्सव तीन दिनों तक धूम-धाम और मस्ती भरे माहौल में मनाया जाता था। वर्तमान में भी यह उत्सव राष्ट्रीय स्तर पर मनाया जाता है। सुजानपुर का होली उत्सव देश और विदेश भर में प्रसिद्ध है।❖ **लेखिका हमीरपुर जिले में डी.एल.ओ. हैं।**

# मातृवन्दना पाठक सम्मलेन

शिमला शहर के टुटू में पाठकों की शिकायतें व सुझाव साझा करते हुए दलेल सिंह ठाकुर, मीनाक्षी सूद व डॉ. ज्योति प्रकाश

शालाघाट में पाठकों की शिकायतें व सुझाव साझा करते हुए शिमला विभाग के कार्यवाह मोती लाल गौतम

सुन्दर नगर में पाठक सम्मेलन में पाठकों के सुझाव साझा करते हुए मातृवन्दना संस्थान के सचिव जयसिंह ठाकुर, जिला संघचालक कन्हैया लाल वर्मा, दुर्गा दत्त शर्मा, जिला प्रचार प्रमुख नंद लाल ठाकुर व जिला कार्यवाह खुशाल सिंह

कांगड़ा के शाहपुर में पाठकों की शिकायतें व सुझाव सुनते हुए विभाग प्रचार प्रमुख महेन्द्र सिंह व खंड संघचालक रवीन्द्र कटोच

# आपदाओं के दौरान जान बचाएंगे रोबोट

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के क्षेत्र में नई खोजों की मदद से रोबोट को ज्यादा सक्षम बनाने में मदद मिली है। इससे यह डर भी फैल रहा है कि आने वाले दिनों में रोबोट इंसानों की नौकरियां हथियाने लगेंगे, लेकिन फिलहाल इसकी संभावना नहीं दिखती। 2018 में होंडा और वीरोबोटिक्स जैसी कंपनियां अपने रोबोट बाजार में उतारेंगी जो इंसानों की नौकरियां लेने के बजाय उनकी जान बचाने में मददगार होंगे। उदाहरण के लिए भूकंप या बाढ़ की हालत में जब मकानों के गिरने का डर होता है, जान-माल की तलाश में इंसानों को उसके अंदर भेजना जोखिम भरा होता है। इसमें रोबोट सहायता कर सकते हैं।

इजरायली कंपनी रोबोटिकन का रूस्टर रोबोट अत्याधुनिक सेंसर और कम्युनिकेशन तकनीकों की मदद से बेहद कम समय में यह पता लगा सकता है कि मलबे के नीचे कोई इंसान है या नहीं। वह यह जानकारी राहत कर्मियों तक भी पहुंचा सकता है। कंपनी का कहना है कि इससे राहत कर्मियों की जान को खतरा नहीं होगा और राहत कार्यों में समय भी कम लगेगा।❖ **साभार: दैनिक भास्कर**

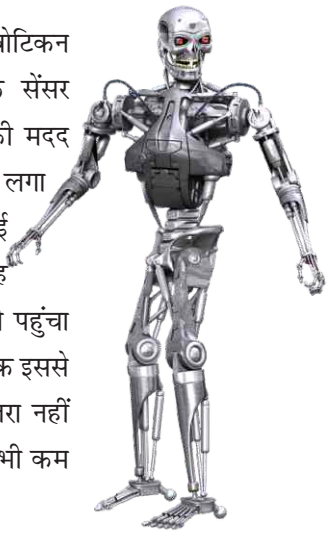

# उत्तर भारतीय राज्यों में हिमाचल के युवा नशे में सबसे आगे

उत्तर भारतीय राज्यों में हिमाचल के युवा नशे में सबसे आगे हैं। यह चौंकाने वाला खुलासा नैशनल फैमिली हैल्थ सर्वे द्वारा उत्तर भारत के राज्यों को लेकर किए गए सर्वे रिपोर्ट में हुआ है। इस रिपोर्ट के मुताबिक हिमाचल का युवा नशे के दलदल में फंसता जा रहा है और हर साल ऐसे मामलों में इज़ाफा हो रहा है। इनमें सिगरेट, बीड़ी और तम्बाकू का सेवन करने वाले मामले शामिल हैं। युवाओं के साथ युवतियां भी नशे की गिरफ्त में हैं। नैशनल फैमिली हैल्थ सर्वे-4 की रिपोर्ट के तहत हिमाचल में पिछले वर्षों के मुकाबले नशे का ग्राफ़ बढ़ा है। हिमाचल में 40.5 प्रतिशत युवक व 0.5 प्रतिशत युवतियां नशा करती हैं। इससे पूर्व किए गए नैशनल फैमिली हैल्थ सर्वे-3 के मुताबिक यह आंकड़ा 40 प्रतिशत था, जिसमें अब 0.5 का इज़ाफा दर्ज किया गया है। दूसरे राज्यों की बात करें तो सर्वे-4 के तहत इन राज्यों में ऐसे मामले हिमाचल से कम हैं। हालांकि फैमिली हैल्थ सर्वे-3 में उत्तराखंड, जम्मू-कश्मीर, हरियाणा, दिल्ली व पंजाब में नशे का यह आंकड़ा सबसे ज्यादा था लेकिन सर्वे-4 में इन राज्यों के आंकड़ों में खासी गिरावट दर्ज की गई जबकि हिमाचल प्रदेश में ऐसे मामलों में बढ़ोत्तरी हुई।❖

# प्रशासनिक अधिकारियों वाला गांव

उत्तर प्रदेश की राजधनी लखनऊ से करीब 240 किलोमीटर दूर स्थित जौनपुर जिले के माधेपट्टी गांव की खासियत ये है कि यहां लगभग हर घर में एक आईएएस और आईपीएस अधिकारी ही जन्म लेते हैं। और यही वजह है कि पूरे जिले में इस गांव को अफसरों वाला गांव कहा जाता है।

इस गांव में लगभग 207 घर हैं लेकिन यहां के 47 आईएएस और आईपीएस अधिकारी उत्तर प्रदेश सहित दूसरे राज्यों में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। माधेपट्टी की धरती पर पैदा हुए बच्चे इसरो और भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र जैसे संस्थानों में वैज्ञानिक होने के साथ-साथ फिलिपींस की राजधानी मनीला में विश्व बैंक में अधिकारी भी हैं।❖

# विश्व बैंक ने सड़क प्रोजैक्ट को दिए 3 मिलियन डॉलर

विश्व बैंक के दूसरे चरण के सड़क प्रोजैक्ट के लिए वर्ल्ड बैंक ने खजाना खोल दिया है। दूसरे चरण के तहत विश्व बैंक ने हिमाचल को 3 मिलियन डॉलर की राशि मंजूरी की है। इससे प्रदेश में 2000 किलोमीटर के मेजर डिस्ट्रिक्ट रोड के कोर नैटवर्क को अपग्रेड किया जाएगा। 3 मिलियन डॉलर की राशि मिलने के बाद लोक निर्माण विभाग कंसल्टैंट नियुक्त करेगा। इसके बाद कंसल्टैंट सड़क प्रोजैक्ट की डी.पी.आर. तैयार करेंगे। दूसरे चरण के सड़क प्रोजैक्ट को विश्व बैंक पहले ही मंजूरी दे चुका है। प्रोजैक्ट के तहत विश्व बैंक हिमाचल को कुल 110 मिलियन डॉलर प्रदान करेगा। प्रदेश में इससे 650 किलोमीटर लंबी सड़कों को अपग्रेड और 1350 किलोमीटर लंबी सड़कों की मुरम्मत की जाएगी। इससे पहले विश्व बैंक की टीम दिसम्बर माह में हिमाचल आई थी।

उस दौरान विश्व बैंक की टीम ने पहले चरण में जिन सड़कों का काम किया गया था, उनका निरीक्षण किया था। काम संतोषजनक होने के बाद ही विश्व बैंक ने दूसरे चरण के सड़क प्रोजैक्ट को हामी भरी थी। इसके बाद लोक निर्माण महकमा कंसलटैंट नियुक्त करने की औपचारिकताओं को पूरा करेगा। सूचना के मुताबिक फेज-टू प्रोजैक्ट की ब्रांच- वन द्वारा 120 किलोमीटर लंबी सड़कों को अपग्रेड किया जाएगा। शेष 530 किलोमीटर सड़क को ब्रांच-टू द्वारा मंजूर होने के बाद अपग्रेड किया जाएगा।❖

# 2 डिग्री तापमान बढ़ा तो सूख जाएगा पृथ्वी का एक चौथाई हिस्सा

वैज्ञानिकों का कहना है कि यदि हमारे ग्रह के तापमान में 2 डिग्री सैल्सियस की वृद्धि हुई तो पृथ्वी का एक-चौथाई हिस्सा काफी हद तक सूख जाएगा। भारतीय मूल के एक वैज्ञानिक सहित, वैज्ञानिकों के एक समूह ने अपने अधययन में कहा कि ऐसा होने की स्थिति में पृथ्वी पर सूखा और जंगलों में आग लगने की घटनाएं बढ़ सकती हैं। हालांकि, अगर वैश्विक ऊष्मन को 1.5 डिग्री सैल्सियस तक रोक लिया तो वह धरती के कुछ हिस्सों में होने वाले ऐसे बदलावों को रोक सकेगा। ब्रिटेन के यूनिवर्सिटी ऑफ ईस्ट एंगलिया और चीन के सदर्न यूनिवर्सिटी ऑफ साइंस एंड टैक्नोलॉजी ने इस निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले जलवायु परिवर्तन से जुड़े 27 मॉडलों का अधययन किया है। अपने अध्ययन के दौरान उन्होंने औद्योगिक क्रांति के समय के मुकाबले वैश्विक ऊष्मन में 1.5 से 2 डिग्री सैल्सियस की वृद्धि होने पर जगह सूखी हो जाएगी, उनकी पहचान की है। ❖

# असम में 20 हजार फर्जी नागरिक

2017 के जाते-जाते और 2018 के आते-आते एक अति महत्वपूर्ण घटना ने जन्म लिया। देश के भविष्य के लिए चिन्तित सभी लोगों को सर्वोच्च न्यायालय, केंद्र के गृह मंत्रालय और असम सरकार को इसके लिए साधुवाद बल्कि बधाई देनी चाहिए। आधी शताब्दी के अंतराल पर असम के राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर को अपडेट करने की ठोस कार्यवाही सिरे चढ़ने लगी है। सर्वोच्च न्यायालय ने यही अंतिम तारीख रखी थी और सारे उपक्रम को अपनी देख रेख में चलाया है। यद्यपि काम पूरा नहीं हुआ है पर न केवल इसकी प्रक्रिया निश्चित हो गई बल्कि उसी के तहत काफी काम भी पूर्ण होकर जनता के सामने है। पाकिस्तान ने अस्तित्व में आते ही नारा दिया था लड़ कर लिया है पाकिस्तान हंस कर लेंगे हिन्दुस्थान। संभवत: अपनी इसी योजना के चलते असम में भारी संख्या में पूर्वी पाकिस्तान (आज के बांग्लादेश) से असम प्रांत में अवैध घुसपैठ हुई और असम के एक बड़े इलाके को मुस्लिम बहुल और पाक परस्त बना दिया। यह घुसपैठ अनवरत जारी है।

बीमारी जितनी पुरानी होती है, उतनी ही उसकी पहचान तो सरल परन्तु इलाज दुष्कर होता है। जानकार लोगों का कहना है कि घुसपैठ का यह सिलसिला उन दिनों प्रारम्भ हुआ जब राष्ट्रपति बनने से पहले फखरूद्दीन अली अहमद असम की राजनीति में सक्रिय थे वे असम प्रान्त के कांग्रेस के अध्यक्ष थे तथा अनेक महत्वूपर्ण विभागों के मंत्री भी रहे। उन्होंने न केवल इस घुसपैठ की अनदेखी की बल्कि उसे प्रोत्साहित भी किया। ये घुसपैठिये वोटर भी बनते गए और वहां वोट के लालच का खेल भी पनपता चला गया। इस घुसपैठ के विरूद्ध आन्दोलन भी चले। छात्रों द्वारा आसु के बैनर तले एक प्रबल आंदोलन हुआ, घुसपैठ विरोधी सरकार भी वहां कायम हुई, पर कोई ठोस काम नहीं हुआ। गत विधानसभा चुनावों में भाजपा ने वहां की जनता से वायदा किया था कि वो इस विषय को गंभीरता से लेकर कुछ ठोस कदम उठायेंगे। राजनीतिक प्रतिबद्धता के बिना इतना बड़ा काम होना कठिन होता है।

अभी जो तथ्य सामने आए हैं, उसके अनुसार कुल 3. 8 करोड़ लोगों ने नागरिकता रजिस्टर में नाम चढ़वाने के लिए आवेदन किया था। इसमें से 1.9 करोड़ लोगों की नागरिकता पक्की हो गई है, शेष के सत्यापन का काम तेजी से चल रहा है। इस सारी प्रक्रिया में लगभग 20 हजार फर्जी नागरिक पकड़ में आए हैं, उन्हें हिरासत में रखा गया है। गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने बताया है कि जिन लोगों का नाम पहली सूची में नहीं आया है, उन्हें परेशान होने की आवश्यकता नहीं है- वे अगली सूची की प्रतीक्षा करें।

इसी बीच तृणमूल कांग्रेस व कांग्रेस तथा कुछ अन्य छोटे दलों ने इस सारी प्रक्रिया से नाराजगी प्रकट की है तथा इसे वहां के नागरिकों को विशेषकर मुसलमानों को आतंकित करने वाला कदम बताया है। मुस्लिम तुष्टिकरण व मुस्लिम वोट प्राप्त करने की उनकी मानसिकता पहले की तरह ही काम कर रही है। सभी तरफ इस सारे प्रकरण और उससे सधने वाले राष्ट्रीय हित पर चर्चा होना अपेक्षित है। ❖

# मण्डी का महाशिवरात्रि महोत्सव

-वासुदेव शर्मा

ब्रह्मा, विष्णु और महेश त्रिदेव की यह त्रिमूर्ति सृष्टि के कार्यों का जन कल्याण के लिए निर्वहन करते हैं। अर्थात्-सृष्टि के रचनाकार स्वयं ब्रह्मा हैं, समस्त जीवों के पालनहार श्री विष्णु भगवान हैं और इस धरा पर अपना-अपना दायित्व निभाकर उपयोगिता सिद्ध करने के पश्चात् सभी जीव-जन्तु, मनुष्य और समस्त पदार्थ भगवान शंकर की शरण में चले जाते हैं। चन्द्र मौली, गंगाधर, भगवान शिव अनादि, अजन्मा आदि-अन्त से अगम, आशुतोष, भक्तों के तारक और दुष्टों के संहारक, दीनों के नाथ जगत के विश्वनाथ हैं। सारे संसार की कड़वाहट अपने कण्ठ में धारण कर नीलकण्ठ कहलाने वाले जगत के हितकारक बने, भक्तों को हर समय प्राप्त रहने वाले, अल्पायु मार्कण्डेय को दीर्घायु करने वाले हैं, भगवान शिव।

*फाल्गुन कृष्णचतुर्दश्यामादि देवो महानिशि।*
*शिवलिंगतयोद्भूतः कोटि सूर्यसम्प्रभः।।*

**अर्थात्:**- फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी की रात्रि में आदि देव भगवान शिव करोड़ों सूर्यों के समान प्रभाव वाले लिंगरूप में प्रकट हुए। शिवरात्रि अर्थात्- वह रात्रि जिसका शिवत्व से घनिष्ठ संबंध है। भगवान शिव की अति प्रिय रात्रि को शिवरात्रि कहा गया है। (शिव पुराण, ईशान संहिता) महाशिवरात्रि का पर्व शिवोपासकों के लिए अत्यन्त श्रद्धा व भक्ति वाला दिन होता है।

**शिवरात्रि का महत्वः**- माता पार्वती के पूछने पर भगवान शिव कहते हैं कि- फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी की रात्रि को जो व्यक्ति भक्ति भाव से व्रत-उपवास कर शिव-उपासना करता है, मैं उस पर प्रसन्न होता हूं।

इसी दिन भगवान विष्णु व ब्रह्मा के समक्ष सबसे पहले शिव का अत्यन्त प्रकाशवान आकार प्रकट हुआ था। ईशान संहिता के अनुसार- बह्मा और विष्णु को स्वयं पर अभिमान हो गया और स्वयं को अधिक श्रेष्ठ सिद्ध करने हेतु संघर्ष छिड़ गया। तब भगवान शंकर उन दोनों में मध्यस्थ बनकर सामने आए और स्वयं एक अग्नि-स्तम्भ के रूप में स्थापित हुए। तब श्रीविष्णु पाताल की ओर और श्रीबह्मा अपने वाहन हंस पर आरूढ़ होकर ऊपर अर्थात् आकाश की ओर उस अग्नि स्तम्भ के छोर का अनुमान लगाने निकल पड़े। लेकिन उन्हें उस स्तम्भ का कोई ओर-छोर मालूम न हो सका। तत्काल ही उन्हें अपने अभिमान का भी आभास हो गया, उसी समय भगवान शिव प्रकट हुए। यह घटनाक्रम भी फाल्गुन कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी की रात्रि को ही हुआ था।

इसी चतुर्दशी को भगवान शिव और आदिशक्ति माता पार्वती का विवाह भी हुआ था। शिव के ताण्डव और माता पार्वती के लास्य भाव के समन्वय से ही सृष्टि का सन्तुलन बना हुआ है।

हिमाचल प्रदेश में भी सम्पूर्ण देश की तरह ही शिवरात्रि पर्व बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता है। लेकिन मण्डी जिला की शिवरात्रि की धूम सर्वत्र व्याप्त है। लोकभाषा के गीत की पंक्तियां इसकी गवाह हैं- 'मण्डी लगीरा रे म्हारे मेला शिबादासिये, आई लोड़ी मेले जो जरूर तेरी सो।' मण्डी में रियासत काल अर्थात- लगभग पांच सौ वर्षों से यह उत्सव मनाया जा रहा है। पूर्व में लगभग सौ के करीब प्रमुख देवता भूतनाथ के मन्दिर में एकत्रित होकर भगवान शिव को नमन किया करते थे। उसके बाद रियासत के राजा के सम्मुख आकर भी अभिवादन करते। कालान्तर में जब राजा सूरज सेन (1637-1664 ई.)ने श्रीकृष्ण की प्रतिमा के समक्ष अपनी रियासत का भार सौंप दिया, उसके बाद से ही माधोराय के समक्ष सभी देवता नमन करते हैं। वर्तमान में देवताओं के आगमन की संख्या दौ सौ से पार भी चली जाती है शिवरात्रि महोत्सव सप्ताह भर खूब धूमधाम से मनाया जाता है। महोत्सव के पहले दिन माधोराय मन्दिर में पूजा -अर्चना के पश्चात प्रमुख पुजारी और मुख्य अतिथि की अगुवाई में जलेब (यात्रा) प्रारम्भ होती है और शहर के प्रमुख मार्गों से होते हुए पड्डल मैदान पहुंचती है। यह क्रम उत्सव के चौथे और अन्तिम दिन भी चलता है। इस उत्सव में दूर-दराज से आए देवी-देवताओं के दर्शन सभी लोगों को एक जगह पर सुलभ हो जाते हैं। सरकार की ओर से सभी देव मण्डलियों के भोजन एवं आवास की व्यवस्था की जाती है। मेले के अन्तिम दिन सभी देवी-देवताओं को नजराने के रूप में चद्दर भेंट की जाती है।❖

## जुआन

अपणे देसा रा हीरो जुआन
जेहड़ा देसा तांई, देई दिंदा जान
अपणे सीने पर, खांदा गोली
तांई दुश्मणां रे, छक्के छुड़ान
जुआनां ते बड़ा, हीरो न कोई
जेड़े देसे तांई, जान करन कुर्बान
अपणे देसा रा हीरो न कोई
जेड़े देसे तांई, जान करन कुर्बान
अपणे देसां रा हीरो जुआन. . .।
जज्बा, जनून, इतणा, जुआनां अन्दर
कदी बी न खतरे, तों घबरान
छडी मती दूर, अम्मा- बापू, अपणा टब्बर
सरहदा री हिफाजता, ओ जाण
अपणे देसा री, करदे रखयाली
खड़ोन्दे सरहदा पर, सीना तान
अपणे देसा रा हीरो जुआन
जम्मी होऐ बर्फ, पोऐ तपदे रेगिस्तान
कदेई भी होए रूत, हैन्नी करदे रमान
होली, दशहरा, दिआली, बशाखी
पूरे त्योहार, सरहदा पर मनाण
अहां त्योहारां मनाण, सुखे कन्नै रैन
इन्ना दी बदौलत अहां, नए सालां रा जश्न मनाण
आपणे देसा रा हीरो जुआन...।
बड़ा दुख हुन्दा, दिल बडा रोन्दा
जाहलु सरहदा पर जुआन हुन्दे कुर्बान
आतंकी, नक्सली अपणे जुआनां जो
हर टैम दिन्दे नुकसान
कुण दिन ओन्गा, सैह कुण पल हुन्गा
जाहलु सरहदा पर हुन्गा अमन चैन
अपणे देसा रा हीरो जुआन
जेहड़ा देसा ताई गवाई दींदा जान अपणे देसां।।

*सुषमा देवी, भरमाड़, ज्वाली, कांगड़ा*

## बांका हिमाचल

कितणा सुन्दर कितणा प्यारा,
सबणी ते बांका हिमाचल म्हारा।
बरफानी तेंदुआ, जाजु राणा कने गुलाबी बुरांस,
पालीथीन लफाफे कनारे करीणें,
बांके पर्यावरणां च लैन्दे सांस
सोहणे सनखे माहणू करने गोरियां गोरियां नारां।
लुकाछिपी खेलदियां बरफा
ढकी रियां धारां,
कोटि कोटि बधाइयां देवा,
जन्म मैं ऐथी पाया।
देवी-देवां आग्गे माथा टेकया,
तीर्थे रोज नहाया।
कै बांके लवी, शिवरात्रि कने त्योहार,
कै बांके सांगला, मणिमहेश, चूड धार,
मोतियों जड़ा धौला धार कै बांके गोबिन्दसागर,
रेणुका, पंडोह, कने पौंग,
कै बांके गैहणे, टिकलू बिन्दलू, कने
लस्कारयां मारदे लौंग
मानदार कमाऊ माहणू इत्थारे,
परौणेयां जो मनदे भगवाण।
ऐड़िया धरतिया खातर,
तन-मन-धन कुर्बान
बेटियां पढ़ाणा, रूढ़ीवादी प्रथा जो मटाणां।
भाईचारे, देशप्रेमां रिया चूटा लाणां।
करयाला, गंगी, मोहणा,
बांठडा, नच्ची गायी सुणाणां।
अपणां हिमाचल धरतिया रा सुरग बणांणा।
आज्ज सबणी कने अरदासां करे संख्यान,
हिमाचला रे नज़ारे देखी,
पढ़ा खुशियां मणांदा हुंगा भगवान।।

*रवि कुमार सांख्यान, मैहरी काथला, बिलासपुर हि.प्र.*

# खेती के लिए वरदान है वर्मी कपोस्ट

जैविक खाद को आधुनिक तरीके से तैयार करने की एक विधि 'वर्मी कम्पोस्ट' है। इसके द्वारा किसान भाई बेकार पड़े हुए वानस्पतिक अवशेष को दो माह की अवधि में मूल्यवान जैविक खाद वर्मी कम्पोस्ट में बदल सकते हैं।

**वर्मी कम्पोस्ट**

आवश्यक नमी, तापक्रम एवं आक्सीजन मिलने पर केंचुओं के द्वारा फसलों के अवशेष, गोबर एवं धीमे सड़ने वाले कार्बनिक पदार्थों के विघटन से बनी खाद को ही वर्मी कम्पोस्ट या केंचुआ खाद कहते हैं। इसमें केचुओं की कास्टिंग, मल, कोकुन, लाभकारी सूक्ष्म जीवाष्म एवं आवश्यक पोषक तत्व पाये जाते हैं। केंचुओं का वैज्ञानिक तरीकों से प्रजनन तथा बड़ा करना 'वर्मी कल्चर' कहलाता है।

**वर्मी कम्पोस्ट के लिए केंचुए**

वर्मी कम्पोस्ट बनाने के लिए विशेष प्रकार से सतह पर रहने वाले केंचुए काम आते हैं। इनकी लम्बाई औसत 5 से 10 से.मी. और वजन आध ग्राम से दो ग्राम तक होता है। ये भूरे, हल्के नीले एवं लाल रंग के होते हैं। ये केंचुऐ 60 प्रतिशत कार्बनिक पदार्थ एवं 10 प्रतिशत मिट्टी खाते हैं, इसलिए ये वर्मी कम्पोस्ट के लिए ज्यादा उपयोगी होते हैं। इनकी कई जातियां हैं जिनमें 'आईसीनिया फोटिडा' एवं 'यूट्रीलस युजेनाई' वर्मी कम्पोस्ट बनाने में अच्छी मानी जाती हैं। उपयुक्त तापक्रम, नमी, अंधेरी अवस्था एवं वानस्पतिक खाद्य पदार्थों की उपस्थिति में ये केंचुए चार सप्ताह में वयस्क होकर प्रजनन करने लायक बन जाते हैं। एक केंचुआ एक सप्ताह में दो से तीन कोकून देता है एवं एक कोकून में तीन से चार अण्डे होते हैं। इस तरह एक केंचुआ 6 महीने में डेढ़ सौ से ढाई सौ केंचुए पैदा कर सकता है।

**कैसे तैयार होती है**

वर्मी कम्पोस्ट बनाने के लिए सबसे पहले 2-2.5 मीटर ऊंचा एक छप्पर तैयार करते हैं ताकि पर्याप्त तापमान एवं छाया रखी जा सकते। इसमें जमीन की सतह पर 12-15 मीटर लम्बाई एवं एक मीटर चौड़ाई की क्यारियां तैयार की जाती हैं। इन क्यारियों में पहले अलग-अलग परतें लगाई जाती थी। अब परीक्षणों से पता चला है कि परतें न लगाकर कृषि अवशेषों में थोड़ा गोबर मिला कर 10-15 दिन रखकर उसमें पानी का छिड़काव करना ठीक रहता है। इसके बाद इस मिश्रण को बेड में डालते हैं। साधरणत: बेड का आकार 3X1X0.3 मीटर रखते हैं। इस माप के बेड में 3 किलोग्राम केंचुओं को हिसाब से सतह पर छोड़ते हैं। उस पर बोरी से ढक दें। झारे से आवश्यकतानुसार पानी छिड़कते रहें ताकि 40-50 प्रतिशत नमी बनी रहे। अधिक पानी नहीं डालें अन्यथा केंचुआ एवं सूक्ष्म जीवाष्म काम नहीं कर पाएंगे तथा मर भी सकते हैं। बेड का तापक्रम 25-30 डिग्री सेन्टीग्रेड होना चाहिए।

केंचुए सड़ रहे कार्बनिक पदार्थों को खाने लगते हैं तथा दो माह के अन्दर बिछाये गए गोबर मिश्रित अवशेष को वर्मी कम्पोस्ट खाद में बदल देते हैं। वर्मी कम्पोस्ट तैयार होने पर ऊपरी सतह चाय के पाउडर जैसी काले रंग की दिखाई देती है। इस समय पानी का छिड़काव बंद कर दें ताकि केंचुऐ नमी की तरफ नीचे अंधेरे में चले जाएंगे। तत्पश्चात ऊपर काले रंग के वर्मी कम्पोस्ट को अलग किया जा सकता है। ऊंची श्रेणी का वर्मी कम्पोस्ट बनाने के लिए एक बेड में 200 ग्राम ट्राईकोडरमा, 200 ग्राम ऐजोटोबेक्टर, 200 ग्राम पी.एस.बी. एवं 500 ग्राम नीम की खली को समान रूप से बिखेर कर वर्मी कम्पोस्ट बेड में मिलावें।❖ **साभार पाथेय कण**

# आयुर्वेद से आयुष्मान

-डॉ0 अनुराग विजयवर्गीय

नींद का हमारे जीवन में अत्यधिक महत्त्व है। आयुर्वेद महर्षियों के अनुसार ठीक तरीके से नींद का सेवन करने से हमारे शरीर को अत्यंत सुख की प्राप्ति होती है। इससे हमारा शरीर पुष्ट बनता है। इसी से हमारे तन-मन को ज्ञान की प्राप्ति होती है। यौन-सुख को भी नींद के ही अधीन माना गया है। आयुर्वेद महर्षि चक्रपाणि के अनुसार जब हम पूरी मात्रा में नींद नहीं लेकर अधिक मात्रा में जागते हैं, तो हमारा तन एवं मन थकते चले जाते हैं और शरीर में कफ नामक दोष अल्प होता चला जाता है तथा पित्त-दोष बढ़ जाता है जिसके परिणाम-स्वरूप अनेकानेक पित्त-सम्बंधी रोग पैदा होने लगते हैं। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि नींद की कमी से होने वाली हानियां इस प्रकार हैं- दुख, कमजोरी, दुबलापन, नपुंसकता, अज्ञान तथा क्रमशः मृत्यु की प्राप्ति।

**कुछ घरेलू उपचार**

- रात के समय जल्दी सोने एवं जल्दी उठने का नियम बनाएं।
- दिन के समय भूलकर भी नहीं सोएं।
- नींद की गोलियों के सेवन से बचें।
- शरीर को टेढ़ा-मेढ़ा करके नहीं सोएं।

**आयुर्वेदिक औषधियां**-अभ्रक भस्म, स्वर्ण माक्षिक भस्म, ताप्यादी लौह, केपसूल तगर, कैपसूल अश्वगंधा, सर्पगंधाघन वटी, ब्राह्मी वटी (सुवर्ण), प्रवाल पिष्टी, मुक्ता पिष्टी, द्राक्षासव, अश्वगंधारिष्ट एवं सारस्वतारिष्ट इत्यादि औषधियों का यथा-योग्य सेवन आयुर्वेद विशेषज्ञ की देखरेख में करने से अमृतवत लाभ होता है।

अश्वगंधा 50 ग्राम, ब्राह्मी 50 ग्राम, शंखपुष्पी 50 ग्राम, वच 50ग्राम, मुलहठी 50 ग्राम, आंवला 50 ग्राम, अर्जुन छाल 50 ग्राम, जटामांसी 50 ग्राम, असली खुरासानी अजवायन 50 ग्राम, मालकांगनी 25 ग्राम, स्वर्णमाक्षिक भस्म-15 ग्राम, अकीक पिष्टी, मुक्ता शुक्ति पिष्टी 10-10 ग्राम।

निर्माण विधि-1 इन सबको अलग-अलग पीसकर बारीक चूर्ण बना लें। तत्पश्चात् एक साथ मिलाकर किसी बरतन में सुरक्षित रखें।

**मात्रा**- रात को सोने से पहले 3

**अनुपान**-हलका गरम दूध।

**होने वाले लाभ**-

(1) नीद नहीं आने की शिकायत दूर होती है।

(2) इस औषधि के प्रभाव से बिना सपनों वाली गहरी नींद आने लगती है।

(3) यही औषधि बढ़े हुए ब्लड-प्रैशर को भी सामान्य कर देती है।

(4) इसका सबसे बड़ा लाभ यह है कि इसका सेवन करने से ऐलोपैथिक दवा की भांति सुस्ती आना, मदहोशी जैसी छाई रहना जैसे लक्षण पैदा नहीं होते हैं। यह इस औषधि का अद्‌भुत प्रभाव है कि इस औषधि का रात को सेवन करने के बाद सवेरे व्यक्ति पूरी तरह से तरो-ताजा महसूस करता है। इसके सेवन से शरीर एवं मन हलकापन आता है। धनवान लोग इसमें मोती पिष्टी बीस ग्राम तक भी मिला सकते हैं। जवाहर मोहरा नम्बर 1 की गोली भी साथ में ले सकते हैं।

**नुस्खा नम्बर 3**

आप बाजार से बनी-बनाई दवा सर्पगंधा घन वटी 2 गोली रात को दूध से ले सकते हैं। चाय और काफॅी का सेवन रात को न करें। 'रोगन खसखास' को रात को सोते समय नाक में 3-4 बूंद डालें। माथे पर भी हलके हाथों से इस तेल की मालिश करें। पैरों के तलवों में सरसों के तेल या देशी घी की मालिश करनी चाहिए। बहुत लाभकारी है। कई रोगियों पर आजमाया है। ❖email anurag.ayurveda@rediffmail.com

# कसौली में सम्पन्न हुआ शीतकालीन संघ शिक्षा वर्ग

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ हिमाचल प्रदेश का संघ शिक्षा वर्ग प्रथम वर्ष (सामान्य) कसौली के कसौली इन्टरनेशनल पब्लिक स्कूल में 7 से 28 जनवरी तक आयोजित किया गया। इस वर्ग में हिमाचल प्रदेश के 350, दिल्ली के 13 व हरियाणा के एक स्वयंसेवक सहित कुल 364 शिक्षार्थी थे। वर्ग में शिक्षार्थियों को कुशल प्रशिक्षण प्राप्त हो इस हेतु 40 शिक्षक 20 दिन तक उपस्थित रहे। विभिन्न व्यवस्थाओं में 50 से अधिक प्रबन्धकों के सहयोग से पूरा वर्ग कुशलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। शिक्षार्थियों को संघ की कार्यपद्धति, रीति-नीति, अनुशासन के प्रशिक्षण हेतु समय-समय पर वरिष्ठ कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन भी प्राप्त हुआ।

20 जनवरी को वर्ग के स्वयंसेवकों का कसौली बाज़ार में एक भव्य पथ संचलन निकाला गया। वर्ग में मातृहस्त भोजन, संस्काररथ का भी आयोजन हुआ। स्वयंसेवकों को सेवा और प्रचार व सोशल मीडिया का 3 दिन का प्रशिक्षण दिया गया। वर्ग के समापन अवसर पर उत्तर क्षेत्र प्रचारक प्रमुख रामेश्वर दास जी का उदबोधन भी सभी स्वयंसेवकों तथा क्षेत्र की जनता को प्राप्त हुआ। वर्ग के समापन अवसर पर वर्गाधिकारी हेमराज शर्मा, सेवानि. निदेशक, बागवानी विभाग हि.प्र., कार्यक्रम अध्यक्ष सेवानि. आई.ए.एस. बी.एम. नान्टा, प्रांत संघचालक कर्नल सेवानि. रुप चन्द, वर्ग कार्यवाह सुनील शास्त्री, प्रांत प्रचारक संजीवन कुमार व सह-प्रांत प्रचारक संजय सिंह भी उपस्थित रहे। ❖


*With Best Compliments from:*
*A School with a difference*

**SARASWATI VIDYA MANDIR**

*Affiliated to H.P. School Education Board Dharamshala. (Affiliation No.: 26021)*

**प्रवेश प्रारम्भ सत्र 2018-19**

| | |
|---|---|
| *नर्सरी कक्षा से नवम कक्षा तक प्रवेश: 1 फरवरी से मात्र कुछ सीटें* | नियमित कक्षाएं 19 फरवरी से प्रारम्भ |
| *10+1* तथा *10+2* कक्षा में 02 अप्रैल से मात्र कुछ सीटें | *10+1* तथा *10+2* कक्षा 16 अप्रैल से प्रारम्भ |

Senior Secondary School Samoli (Rohru) Nursery to (10+2 Science), (Recognised)

**Ph.: 01781-241623 Mob.: 98573-71887, 94592-71887**

*www.rohru.svmschools.org* YOUTUBE चैनल को Subscribe करें *Samoli126@gmail.com*

# तीन तलाक पर छिड़ी राजनीतिक बहस

-नीतू वर्मा

संसद के शीतकालीन सत्र में मुस्लिम महिलाओं को तीन तलाक अथवा तलाक-ए-बिद्दत की कुप्रथा से मुक्ति दिलाने के उद्देश्य से प्रस्तावित मुस्लिम महिला (विवाह अधिकार संरक्षण) विधेयक, 2017 को लोकसभा में पारित करवाने में सफल रहने के पश्चात् केंद्र सरकार इसे राज्य सभा से अभी तक पास नहीं करवा पाई है। 28 दिसंबर , 2017 को लोकसभा से पास करवाने के बाद, राज्य सभा में संख्या बल की कमी व विपक्षी दलों के विरोध के चलते इस विधेयक को पास नहीं किया जा सका।

इससे पहले, 22 अगस्त 2017 को सुप्रीम कोर्ट की संविधान पीठ द्वारा सायराबानो के मुस्लिम पर्सनल लॉ (शरीयत) एप्लिकेशन कानून 1937 की धारा 2 की संवैधानिकता को चुनौती देने वाली याचिका सहित सात अन्य याचिकाओं पर बहुमत के निर्णय में फैसला देते हुए मुस्लिम समाज में प्रचलित तीन बार तलाक देने की प्रथा को निरस्त करते हुए इसे असंवैधानिक, गैर कानूनी और शून्य करार दिया था। कोर्ट ने भी माना कि तीन तलाक की प्रथा कुरान के मूल सिद्धांत के खिलाफ है। प्रधान न्यायाधीश जगदीश सिंह खेहर और न्यायमूर्ति एस अब्दुलनजीर ने इस प्रथा पर छह महीने की रोक लगाने की हिमायत कर केन्द्र सरकार को इस संबध में कानून बनाने के निर्देश दिए थे,जब कि तीन अन्य न्यायाधीशों , न्यायाधीश कुरियन जोसफ, न्यायमूर्ति आर.एफ.नरीमन और न्यायमूर्ति उदय यू ललित ने इस प्रथा को संविधान का उलंघन करने वाला करार दिया था।

कुछ पक्ष इस प्रथा को गलत ठहराते हुए भी इस बिल के विरोध में जो तर्क दे रहे हैं वो सियासी अधिक तथा तर्क संगत कम लगते हैं। सत्य यह भी है कि कुछ मुस्लिम धार्मिक संगठन केंद्र सरकार के मुसलमानों से संबधित प्रत्येक निर्णय को शक की निगाह से देखते हैं तथा उनके संदेह को देश की विपक्षी पार्टियां हवा देकर, इन कदमों को सरकार द्वारा अल्पसंख्यक मुस्लिम समुदाय को हाशिए पर डालने की कोशिश के रूप में पेश करती है।

इस प्रथा के समर्थन में सर्वोच्च न्यायालय में खड़े वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल ने सुनवाई के दौरान इसे आस्था से जुड़ी 1400 साल पुरानी प्रथा कहा तथा इसकी तुलना अयोधया में राम के जन्म से की। उनके अनुसार इसे आस्था से जुड़ा होने के कारण गैर-इस्लामिक नहीं माना जा सकता। वहीं सदन में चर्चा के दौरान भी विपक्षी दलों ने इस बिल के विरोध में अनेक ऐसे तर्क दिए जो किसी भी दृष्टि से उपयुक्त नहीं दिखाई पड़ते। उनके तर्क जैसे इस कानून का प्रयोग मुस्लिम पुरूषों के खिलाफ होगा, यदि पति 3 वर्ष जेल में होगा तो पीड़ित महिला को गुज़ारा भत्ता कौन देगा तथा इस काम के लिए सरकार कोई निधि बनाए ऐसे कुछ तर्क या सुझाव हैं जो इस कानून के अभाव में महिलाओं द्वारा उठाई जाने वाली परेशानियों के सामने कहीं नहीं टिकते। वहीं विपक्षी दलों की इस विधेयक को स्थायी समिति के पास भेजने की मांग भी इस नियम के प्रावधानों को ढीला करने तथा इस नियम के मार्ग में बाधा डालने के अतिरिक्त और कुछ नहीं जान पड़ती है। सरकार की ओर से इस कानून के पक्ष में दिये गये तर्कों तथा इस प्रथा की भुक्तभोगी महिलाओं की व्यथा के आगे कोई भी विपक्षी तर्क तथा सुझाव केवल राजनैतिक रोटियां सेंकने से ज्यादा कुछ भी नहीं है। सरकार को आगामी बजट सत्र में इस विधेयक को पास करने के लिए कोई कारगर नीति बनाकर इसे जल्द से जल्द कानूनी अमली जामा पहनाने की आवश्यकता है ताकि मुस्लिम महिलाएं तीन-तलाक की इस कुप्रथा से स्वतंत्र हो सकें।❖

# अमेरिका में हो रहा दुनिया के सबसे बड़े मंदिर का निर्माण

गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड के अनुसार क्षेत्रफल की दृष्टि से दुनिया का सबसे बड़ा मंदिर, अक्षरधाम मंदिर है जो स्वामी नारायण मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। इसका विशाल आर्किटेक्चर इसके इतिहास को बयां करता है। लेकिन अब दुनिया का सबसे विशाल मंदिर भारत में नहीं बल्कि विदेश में बन रहा है। अमरीका के न्यू जर्सी शहर में बन रहे इस मंदिर को बनाने में लगभग 18 मिलियन अमरीकी डॉलर का खर्च आ रहा है। गौर करने योग्य बात यह है कि न्यू जर्सी में बन रहे इस मंदिर का निर्माण भी स्वामी नारायण संस्था के द्वारा किया जा रहा है। यह मंदिर करीब 162 एकड़ में फैला हुआ है। इस मंदिर के निर्माण के लिए राजस्थान के करीब 2000 कलाकारों ने अपने हाथों की कलाकारी दिखाई है जिन्होंने संयुक्त रूप से राजस्थानी और इटालियन मार्बल को हाथों से तैयार किया है। मंदिर के कलात्मक डिज़ाइन के लिए 13,499 हजार पत्थरों का उपयोग किया गया है। पत्थरों पर नक्काशी का पूरा काम भारत में ही करवाया गया है।

नक्काशी का काम पूरा हो जाने के बाद इन्हें समुद्री रास्ते से न्यूजर्सी पहुंचाया गया था। बताया जा रहा है कि साल 2014 में इस मंदिर के एक हिस्से का उद्घाटन भी किया जा चुका है। मंदिर में जुड़े सूत्रों के अनुसार इसे बनाने में शिल्प शास्त्र की मदद ली जा रही है। संस्था का कहना है कि इस शास्त्र से दशकों से किसी मंदिर का निर्माण नहीं किया गया है। इमारत निर्माण की इस विधि को पौराणिक काल में काफी उपयोग में लाया जाता था, जिसके तहत हस्त शिल्प का प्रयोग किया जाता था।❖

# यूनेस्को ने कुंभ मेले को 'मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर' के तौर पर मान्यता दी

यूनेस्को ने भारत के कुंभ मेले को 'मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर' के तौर पर मान्यता दी है। अन्तरराष्ट्रीय संगठन ने इसकी जानकारी दी। कुंभ मेले को दुनिया का सबसे बड़ा धर्मिक मेला माना जाता है। यूनेस्को के अधीनस्थ संगठन इंटरगवर्नमेंटल कमिटी फार द सेफगार्डिंग ऑफ इंटेंजिबल कल्चरल हेरीटेज ने दक्षिण कोरिया के जेजू में हुए अपने 12वें सत्र में कुंभ मेले को मानवता के अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर की प्रतिनिधि सूची में शामिल किया। दुनिया का सबसे बड़ा धर्मिक मेला माना जाने वाला कुंभ मेला सूची में बोत्सवाना, कोलंबिया, वेनेजुएला, मंगोलिया, मोरक्को, तुर्की और संयुक्त अरब अमीरात की चीजों के साथ शामिल किया गया है। संस्कृति मंत्री महेश शर्मा ने ट्वीट किया है, ''हमारे लिए बेहद गौरव का क्षण है कि यूनेस्को ने कुंभ मेला को मानवता के अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के तौर पर जगह दी है।'' उन्होंने कहा, कि कुंभ मेला को धरती पर श्रद्धालुओं का सबसे बड़ा शांतिपूर्ण एकत्रीकरण समझा जाता है जिसमें जाति, पंथ या लिंग से इतर लाखों लोग हिस्सा लेते हैं।❖

# भारत में योग सीखा और यूनान में योगाश्रम खोल दिया

भारत का 'योग' पूरे विश्व में किस प्रकार लोकप्रिय हो रहा है उसका जीता-जागता उदाहरण माँ शिवमूर्ति सरस्वती हैं। वे ऑस्ट्रेलिया की हैं। 1976-77 में उन्होंने स्वामी सत्यानन्द से योग की शिक्षा ली फिर उनकी आज्ञा से यूनान में योग सिखाने चली गईं। आज ग्रीस (यूनान) में उनके आश्रमों में सैकड़ों यूनानी योग सीखते हैं। अब तक हजारों ग्रीक नागरिक भारत की इस अद्‌भुत देन की शिक्षा ले चुके हैं। यूनान का उनका प्रमुख आश्रम राजधानी एथेन्स से बीस कि.मी. की दूरी पर हामेटस पहाड़ी की तलहटी में बना है। वर्ष 1977 में अपने गुरू की आज्ञा से शिवमूर्ति सरस्वती जी ने ग्रीस (यूनान) के कलमाता नगर में योग की कक्षाएं लेनी शुरू की। उस समय 'चर्च' ने उनका जबर्दस्त विरोध किया।

प्रारम्भ का समय संघर्ष का था। धीरे-धीरे सीखने वालों की संख्या बढ़ने लगी। प्रशिक्षक जब अधिक बढ़ने लगे तो माँ शिवमूर्ति ने अन्य स्थानों पर भी योगाश्रम प्रारम्भ कर दिए। उसके बाद हाइमेटस पहाड़ी की तलहटी में एक विस्तृत क्षेत्र में आश्रम बना लिया और उसका नाम रखा 'सत्यानंद आश्रम' यहां मुख्य रूप से योग-शिक्षकों का प्रशिक्षण होता है।

इस समय जर्मनी, सर्बिया, इजरायल और स्वीडन के चालीस पुरूष और महिला योग-शिक्षक इस विद्या के गूढ़ सूत्र समझ रहे हैं मां शिवमूर्ति स्वयं भी यूरोप और अमरीका में योग सिखाने जाती रहती हैं।❖

# भारतवंशी वैज्ञानिक प्रतिभा को मिलेगा हेमहुड सम्मान

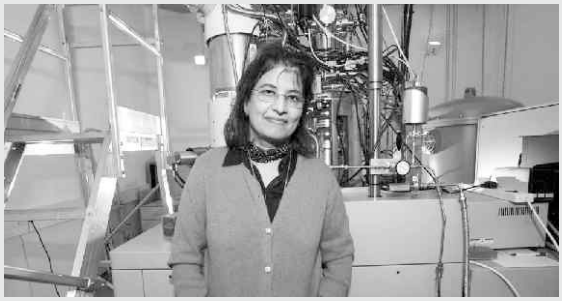

भारतवंशी वैज्ञानिक प्रतिभा लक्ष्मण को इस बार हेमहुड सम्मान के लिए चुना गया है। 2018 में इंग्लैंड की महारानी द्वारा दिए जाने वाले इस सम्मान की रेस में कई भारतवंशी थे लेकिन उनमें से प्रतिभा ने बाजी मार ली। यूनिवर्सिटी ऑफ यॉर्क की प्रोफेसर प्रतिभा, इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोपी की एक्सपर्ट हैं। इस सम्मान के लिए चुनी गई वे चौथी भारतवंशी हैं। इससे पहले महारानी लक्ष्मी देवी (1931), आशा खेमका (2014) और प्रवीण कुमार (2017) शामिल हैं। यह सम्मान बकिंघम पैलेस में क्वीन एलिजाबेथ देंगी।

# भारत का सबसे लम्बा पुल

बोगिबील पुल डिब्रूगढ़ (असम) में ब्रह्मपुत्र नदी पर बनने वाला भारत का सबसे लंबा पुल है। इसकी लम्बाई 9.15 कि.मी. है। इसकी योजना 1985 असम समझौते के अतंर्गत बनी थी। नौंवी पंचवर्षीय योजना के अतंर्गत इसके बनकर तैयार होने की उम्मीद थी। परन्तु इसका निर्माण कार्य किन्ही कारणों से 2002 से शुरु हो सका।

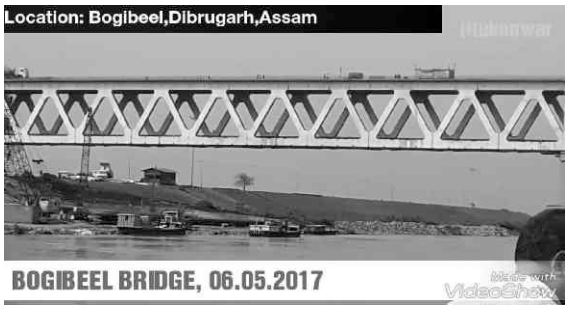

# विकास की ओर अग्रसर हिमाचल

- दलेल सिंह ठाकुर

हिमाचल प्रदेश में भाजपा की सरकार बनने के बाद नये युग का आगाज़ हुआ है। प्रदेश की बागडोर युवा मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर के हाथों सौंपे जाने पर जनता में कई उम्मीदें जगी हैं। हर आयु वर्ग के लोग उत्साहित हैं, विशेष रूप से युवाओं में एक नयाजोश देखा जा रहा है। लोगों में उम्मीद जगी है कि प्रदेश की खस्ताहाल सड़कें अब दुरूस्त होंगी, हर गांव सड़क से जुड़ेगा । प्रदेश की हांफती कानून व्यवस्था में सुधार होगा व पुलिस प्रश्सासन ईमानदारी व सत्य निष्ठा से कार्य करेगा। युवाओं को उम्मीद है कि उनके लिए रोज़गार के नए अवसर सृजित होंगे। स्कूलों व अस्पतालों में स्टाफ की कमी पूरी की जाएगी। मंहगाई पर अंकुश लगेगा व पर्यटन के क्षेत्र में नई संभावनाएं तलाशकर इसका विस्तार किया जाएगा। यह कहने में अतिश्योक्ति न होगी कि प्रदेश की जनता को राज्य के चहुंमुखी विकास की उम्मीद है। लेकिन यह भी सच है कि प्रदेश कर्ज में डूबा है व प्रदेश को कर्ज से छुटकारा दिलाना जयराम सरकार के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। पूर्व कांग्रेस सरकार द्वारा बनाई गई खराब वित्तीय स्थिति कहीं न कहीं मौजूदा सरकार के विकास कार्यों की गति में आड़े आ सकती है। ऐसे में क्या लोगों की अपेक्षाओं व अकांक्षाओं को जयराम सरकार पूरा कर पाएगी? यह एक बड़ा प्रश्न बन कर सामने आता है।

मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर अगले कई वर्षों तक प्रदेश में भाजपा के शासन का दावा कर रहे हैं। लेकिन यह भी सत्य है कि सत्तर के दशक के बाद से प्रदेश में कोई भी सरकार लगातार दूसरी बार काबिज़ नहीं हो पाई है। इसका बड़ा कारण यही है कि अभी तक कोई भी सरकार लोगों की अकांक्षाओं को जमीनी स्तर पर पूरा नहीं कर पाई है। उदाहरण स्वरूप प्रदेश में अस्पताल बने हैं पर डॉक्टर नहीं हैं, सड़कें बनी पर रख रखाव के लिए बजट नहीं, जल है तो स्वच्छ व पर्याप्त नहीं, योजनाएं हैं तो उनका सही ढंग से क्रियान्वयन नहीं हो पाया है। ऐसे कई कारण हैं जो प्रदेश की जनता को संतुष्ट नहीं कर पाते, और जनता बदलाव की राह पकड़ लेती है।

जयराम सरकार के पास युवा टीम है, मंत्रिमंडल युवाओं के जोश से भरा हुआ है, अनुभव भले ही कम हो लेकिन संगठन से जुड़ी सरकार की इस सेना से जनता को कई उम्मीदें हैं। लेकिन सरकार अभी तक कुछ ऐसा नहीं कर पाई जिस से लोगों को कुछ नया देखने को मिले, बदलाव नज़र आए और पूर्व सरकारों की तुलना में सरकार कुछ हटकर काम करती दिखाई दे। अभी भी सरकार ब्यूरोक्रेट्स के दवाब में काम करती नज़र आ रही है। प्रदेश सरकार अभी तक कोई बड़ा कदम नहीं उठा पाई है, जिससे लोगों को सरकार बदलने का अहसास हो। लोग अभी से दबी जुबान में बोलने लगे हैं कि इस सरकार में नया क्या है।

यह सर्व विदित है कि प्रदेश सरकार एक बड़े कर्ज के नीचे दबी पड़ी है, और जयराम सरकार को भी नया ऋण लेना पड़ रहा है, लेकिन बावजूद इसके सरकार को कुछ ऐसा करना होगा कि लोगों को पूर्व सरकारों व इस सरकार में एक फर्क नज़र आए। लोगों की समस्याओं को प्राथमिकता के आधार पर हल करना होगा व स्वच्छ, प्रभावी और जवाबदेही प्रशासन लोगों को मिले, ऐसे प्रयास सरकार को करने होंगे। लोगों का विश्वास जीतना ही जयराम सरकार सबसे बड़ी उपलब्धि होगी।

मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है। किसी भी सरकार के लिए मीडिया संचार-प्रसार का सबसे सशक्त माध्यम है। जयराम सरकार को जहां अपने सरकारी तंत्र सूचना व जनसंपर्क विभाग को चुस्त-दुरूस्त करना होगा, वहीं निजी मीडिया के साथ भी सही तालमेल बैठाकर आगे बढ़ना होगा। पूर्व सरकारों के शासन काल में देखा गया है कि सरकार व मीडिया में अन्तर पैदा हो जाने से सरकार की छवि कुछ हद तक धूमिल हुई है। सरकारी योजनाओं को समय-समय पर मीडिया को अवगत करवाकर उसकी फीडबैक लेने पर मुख्यमंत्री को बल देना होगा। यही नहीं सरकार को संगठन की दृष्टि से भी तालमेल रखना आवश्यक होगा।

पूर्व सरकारों में रहे मुख्यमंत्री पानी के और सड़कों के मुख्यमंत्री के नाम से जाने जाते रहे हैं। मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर को इतिहास के पन्नों पर अपना नाम अंकित करने के लिए विकास के ऐसे आयाम स्थापित करने होंगे ताकि आने वाली पीढ़ियां उन्हें विकास के नाम से जान सकें। जयराम ठाकुर का दूसरा नाम विकास हो ऐसे प्रयास उन्हें करने होंगे। ❖

# सरस्वती विद्या मन्दिर वरिष्ठ माध्यमिक आवासीय विद्यालय

## हिम रश्मि परिसर, विकासनगर, शिमला-171009

**केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से मान्यता प्राप्त**

(संचालित हिमाचल शिक्षा समिति-सम्बद्ध विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षण संस्थान)

**प्रवेश प्रारम्भ**

**सत्र 2018-19**

- कक्षा नर्सरी से नवम् तक और 10+1 (विज्ञान संकाय) कक्षा 6वीं से 12वीं तक छात्रावास सुविधा उपलब्ध (केवल लड़कों के लिए)
- कक्षा 9वीं और 10+1 तथा छात्रावास के लिए प्रवेश परीक्षा 18 व 21 फरवरी, 2018 को होगी।

*अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:*

**प्रधानाचार्य, स.वि.म.व.मा.वि.**

हिम रश्मि परिसर, विकासनगर, शिमला-9

दूरभाष: 0177-2622308, मो.: 70189-22553, 94182-76324

अणु डाक: svmhimrashmi@gmail.com

वेब साईट: www.svmhemrashmi.org

## Registration/Admission Open for Classes IV to X

***Boy's Residential School, Co-Education for Day Scholars Only***

***A Culture Oriented English Medium School***

**(Affiliated to C.B.S.E. Delhi)**

**Website: www.ssnkumarhatti.com**

Run by:
Himachal Shiksha Samiti Shimla,
(A State unit of Vidya Bharti)

# S.S.N.
# PUBLIC SCHOOL
# KUMARHATTI

**Location:** The Complex is situated on Barog bye-pass Road.
It is less than 2 km. from KUMARHATTI.

Managed by:
**Jindal Charitable Trust**
**Nabha (Panjab)**
01765-326661

**J.K. Sharma**
Principal
Ph.: 0177-266410, 94185-58030
e-mail: ssnkumarhatti@yahoo.in

# नाहक विवाद

**- अश्विन मिश्र**

पहली घटना, मार्च, 2017 की है। उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव की सरगर्मी अपने चरम पर थी। इसी कड़ी में काशी में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के रोड़ शो में जनसैलाब उमड़ पड़ा था। उसी समय पत्रकार राजदीप सरदेसाई का एक ट्वीट आया। ट्वीट में उन्होंने लिखा, ''हैरानी, बीएचयू के वीसी गिरीश चंद्र त्रिपाठी प्रधानमंत्री के राजनीतिक रोड शो में शामिल हुए। ये कहां आ गए हम'' राजदीप का ट्वीट आते ही सेकुलर मीडिया ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय को निशाने पर लेकर भड़ास निकालना शुरू कर दिया। जब इस बात की जानकारी कुलपति गिरीश चंद्र त्रिपाठी को हुई है तो उन्होंने राजदीप से गलत जानकारी देने पर माफी मांगने को कहा है और ऐसा न करने पर अदालती कार्रवाई की बात कही। 5 मार्च को राजदीप फिर एक ट्वीट कर लिखते हैं,'' मोदी के रोड शो में बीएचयू के वीसी की तस्वीरें गलत निकलीं। उनसे माफी मांग रहा हूं और ट्वीट वापस ले रहा हूं।''

स्नातकोत्तर की परीक्षा के दौरान राजनीति विज्ञान व इतिहास के प्रश्न पत्र में दो सवाल पूछे गए थे। पहला, कौटिल्य अर्थशास्त्र में जीएसटी की प्रकृति पर एक निबंध लिखिए। दूसरा, इस्लाम में हलाला क्या है, इन प्रश्नों पर न केवल आपत्ति उठाई गई बल्कि केंद्र सरकार तक को निशाने पर लिया गया। कुछ स्वार्थी लोभी और अराजक तत्वों को पता था कि 22-23 सितंबर को प्रधानमंत्री काशी में रहने वाले हैं और विवि में एक वैश्विक संगोष्ठी को संबोधित करेंगे। छोटा नागपुर वाटिका, अस्सी घाट पर 20 अगस्त, 2017 को एक बैठक बुलाई गई, जिसमें बीएचयू आईआईटी से बर्खास्त प्रोफेसर संदीप पांडेय बीएचयू को अशांत करने की साजिश रचते हैं। वे यहां कुलपति के खिलाफ जमकर जहर उगलते हैं।

एकता सिंह विधि विभाग की वह छात्रा हैं जिन्होंने न केवल वामपंथी उत्पात को करीब से देखा बल्कि परिसर में छात्राओं के साथ शुरूआती आन्दोलन का नेतृत्व भी किया। लेकिन वामपंथियों ने जिस तरह से अभियान को 'हाईजैक' करके इसे अपने एजेंडे में बदला, उसे लेकर वे बेहद आक्रोशित हैं। वह बताती हैं, 'जब से प्रधानमंत्री का चुनाव क्षेत्र काशी हुआ है, तब से काशी और बीएचयू एक खास तबके के निशाने पर हैं। कुछ समय पहले विवि में छेड़खानी की जो घटना घटी उससे हम सभी बेहद गुस्से में थे। हमने इसकी शिकायत वार्डन से की लेकिन उन्होंने इसे एक तरह से अनसुना कर दिया। हमने तय किया कि सुबह एक मार्च निकालेंगे, जो सिंह द्वार तक जाकर फिर कुलपति आवास तक आएगा, जहां विवि प्रशासन के सामने अपनी बात रखेंगे। मीडिया यहां पहले से तैयार था। इसमें कुछ ऐसे लड़के-लड़कियां मीडिया को बयान दे रहे थे, जो घटनाक्रम के बारे में जानते तक नहीं थे। गलत बयानबाजियों से मामला तूल पकड़ने लगा और हम सभी को हटने पर मजबूर कर दिया गया था।' वे कहती हैं, 'इसमें संदीप पांडेय गिरोह, नक्सलियों को पोषित करने वाले लोग जुट चुके थे। यहां तक कि जेएनयू, इलाहाबाद विवि और आम आदमी पार्टी के संजय सिंह समेत विभिन्न दलों के लोगों का आना शुरू हो गया था। हम मोहरा बनकर रह गए।'

सामाजिक बहिष्करण एवं समावेशी नीति की छात्रा वैद्रुमी बताती हैं, 'अकेले बीएचयू ही नहीं, अन्य विश्वविद्यालयों में अलग-अलग क्षेत्रों सहित विभिन्न देशों के छात्र रहते हैं तो ऐसी घटनाएं होने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता। लेकिन ऐसी घटनाएं कहीं भी घटें, निंदनीय ही होती हैं पर हमारे आन्दोलन में जिस तरह से आइसा समेत अन्य वामपंथी संगठनों के लोगों ने पहुंचकर आजादी के नारे लगाने शुरू किए, वह समझ से परे था। ऐसे लोगों को कौन-सी आजादी चाहिए थी, मैं समझ ही नहीं पा रही थी। हम सभी परिसर में समुचित प्रकाश, सुरक्षा और सीसीटीवी कैमरे लगाने की मांग कर रहे थे लेकिन प्रदर्शन में शामिल बाहरी तत्वों को इससे कोई मतलब नहीं था। और खास बात यह कि जो चेहरे यहां दिख रहे थे, मैंने न उन्हें परिसर में कभी देखा था और न ही इतने दिन बाद उनमें से कोई दिखा।'❖

**लेखक पाँचजन्य साप्ताहिक में संवाददाता हैं।**

# भारतीय रेलवे की एक अभिनव पहल साइंस एक्सप्रेस

साइंस एक्सप्रेस भारतीय रेलवे की एक अभिनव पहल है जिसे साइंस और प्रौद्योगिकी 'डीएसटी' विभाग के लिए कस्टम निर्मित किया गया है। यह एक 16 कोच एसी ट्रेन है, जिस पर यह मोबाइल साइंस प्रदर्शनी चलती है। यह ट्रेन लोगों के बीच जानकारी पहुँचाने का काम करती है और यह साइंस और प्रौद्योगिकी, पर्यावरण मंत्रालय, वन और रेलवे के जलवायु परिवर्तन 'MoEFCC' और मंत्रालय विभाग का एक अनूठा सहयोगात्मक पहल है जिसका पूरे देश में भ्रमण कराया जा रहा है, जिसका समय सुबह 10 बजे से शाम 5 तक है।

यह अनूठा मोबाइल एक्सपो डीएसटी द्वारा अक्टूबर 2007 में शुरू किया गया था और तब से इसने भारत में 1,22, 000 किलोमीटर की यात्रा सात चरणों में की है, प्रत्येक 6-7 महीने की अवधि यह यात्रा पूरे भारत में पूरी की गयी है। 'साइंस एक्सप्रेस' के पिछले तीन चरणों की यात्राओं को जैव विविधता स्पेशल के रूप में डीएसटी और MoEFCC की एक संयुक्त पहल के रूप में प्रस्तुत किया गया था और असंख्य 'भारत की जैव विविधता' का प्रदर्शन किया गया था। करीब 1.33 करोड़ छात्रों और शिक्षकों ने 'साइंस एक्सप्रेस' का दौरा किया है। यह इस प्रकार से भारत में सबसे लंबे समय तक चल रही मोबाइल साइंस प्रदर्शनी बन गयी है।

'साइंस एक्सप्रेस' के जरिए जलवायु परिवर्तन संबंधी साइंस की जानकारी दी जाएगी तथा उसके प्रभावों और उनसे निपटने के उपायों को दर्शाया जाएगा। इस प्रदर्शनी में जलवायु परिवर्तन के बारे में संदेश दिया गया है। इस रेलगाड़ी से जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों के विषय में चर्चा और संवाद का अवसर मिलेगा। इसके साथ ही जलवायु परिवर्तन का सामना करने के लिए संभावित रणनीतियों के बारे में चर्चा की जाएगी, ताकि भारत विकास पथ पर अग्रसर हो सके। जलवायु परिवर्तन से लड़ने में नागरिकों की भूमिका को भी रेखांकित किया जाएगा।❖

## एक साथ 104 सैटैलाइट लॉन्च

- फरवरी में इसरो ने एक साथ 104 सैटेलाइट लॉन्च कर रिकॉर्ड बनाया।
- मई में पुणे में डॉक्टरों ने पहला गर्भ ट्रांसप्लांट किया।
- जुलाई में खगोल वैज्ञानिक जे.बागची और उनकी टीम ने अंतरिक्ष में नए गैलेक्सी सुपरस्ट्रक्चर की खोज की इसका नाम सरस्वती रखा।
- गुरुत्वाकर्षण तरंग को खोजने वाली टीम को इस साल फिजिक्स का नोबेल मिला। इसमें भारतीय वैज्ञानिकों का भी अहम योगदान रहा। ❖

## प्रश्नोत्तरी

1. हाल ही में किसे भारतीय आईटी सेक्टर का जनक कहा गया है?
2. विश्व का प्रथम क्वाण्टम संचार उपग्रह किस देश ने प्रक्षेपित किया?
3. TRAI के वर्तमान अध्यक्ष कौन हैं?
4. बीएसएनएल ने बड़े घराने को सर्विस देने के लिए किस कंपनी से गठजोड़ किया है?
5. प्रसार भारती का वर्तमान सलाहकार किसे नियुक्त किया गया है?
6. प्रसिद्ध धावक उसेन बोल्ट किस देश से संबंध रखते हैं?
7. त्रिपुरा में भारतीय रेलवे की कौन सी सेवा प्रारंभ की गई है?
8. विश्व बैंक ने अपने सूचकांक में भारत को किस स्थान पर रखा है?
9. हिमाचल प्रदेश के वर्तमान शिक्षा मंत्री किसे नियुक्त किया गया है?
10. मुनिया की अम्मा के चार बच्चे हैं। एक का नाम फाल्गुन, चैत्र और एक का नाम बैशाख। चौथे का नाम क्या है?

## पहेलियां

1. कल बनूं धड़ के बिना, मल बनूं सिरहीन, पैर कटे तो थोड़ा रहूं अक्षर हैं कुल तीन?
2. ऐसी कौन सी चीज है जो है तो तुम्हारी पर इस्तेमाल दूसरे करते हैं?
3. पूंछ कटे तो सीता, सिर कटे तो मित्र, मध्य कटे तो खोपड़ी पहेली बड़ी विचित्र?

उत्तर: 1. कमल, 2. नाम, 3. नारियल।

**सुडोकू-अ-0001-** ***आओ बौद्धिक व्यायाम करें***

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | 4 | 7 | | | 1 | | 3 | 8 |
| | 3 | | | 2 | | | 4 | 1 |
| | | 1 | 4 | | | | 7 | |
| | | | 8 | | 5 | 1 | | 7 |
| | | 9 | 2 | | | | | |
| 2 | 7 | | 3 | | | | | |
| | | 3 | | 6 | | 9 | | 2 |
| 4 | 9 | | | 8 | | | | 5 |
| 6 | | | 9 | | | 4 | | |

# एसजेवीएन विश्व पटल पर

**2014-15 में विद्युत उत्पादन क्षमता में 460 मेगावाट की वृद्धि**

- 412 मेगावाट रामपुर हाइड्रो पावर स्टेशन, हिमाचल प्रदेश
- महाराष्ट्र में 47.6 मेगावाट की खिरवीरे पवन ऊर्जा परियोजना

- हिमाचल प्रदेश में देश का सबसे बड़ा भूमिगत 1500 मेगावाट जलविद्युत स्टेशन।
- आरएचपीएस को ''जल विद्युत परियोजनाएं शीघ्र पूरी करने'' की श्रेणी में ''**गोल्ड शील्ड**'' तथा ''**सिल्वर शील्ड**''।
- ऊर्जा के अन्य स्त्रोतों, पवन, ताप एवं सौर क्षेत्र में प्रवेश।
- विद्युत ट्रांसमिशन एवं परियोजना परामर्श तथा परामर्शक सेवाएं।
- एनजेएचपीएस को वित्तीय वर्ष 2010-11 के दौरान 'बेहतरीन निष्पादन' के लिए '**गोल्ड शील्ड**' पुरस्कार।
- विभिन्न राज्यों एवं पड़ोसी देशों में 12 विद्युत परियोजनाओं का निर्माण-कार्य।

**एसजेवीएन लिमिटेड**
**SJVN Limited**
( A joint Venture of Govt of India & Govt. of Himachal Pradesh)
A Mini Ratna & Schedule 'A' PSU

सीआईएन: L40101HP1988GOI008409
शक्ति सदन, एसजेवीएन कॉरपोरेट ऑफिस काम्पलैक्स, शनान, शिमला-171006
**www.sjvn.nic.in**

HP/48/SML (upto 31-12-2020) Pre Paid RNI No. HPHIN/2001/04280


# देश दुनिया को प्रभावित करने वाली हिन्दुत्व से जुडी विश्व की एकमात्र और विश्वसनीय हिन्दी न्यूज वेबसाईट

## www.Hindutva.info

**कोई लागलपेट नहीं सिर्फ पूरा सच**

Share

- हिन्दूत्व के आधार को दर्शाती एकमात्र मल्टीमीडिया साईट जोकि है पूरे भारत में लोकप्रिय है।
- 1.5 करोड़ से भी ज्यादा फालोअरस।
- हिन्दू धर्म से जुडी पूरी जानकारी।
- राजनीति की तह तक जाने वाली सच्चाई पर आधारित खबरें व खुलासे।

*Designed by :* **New Era Graphics**, Shimla Ph. : 2628276


मातृवन्दना

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 820, फेस - 2, उद्योग क्षेत्र चंडीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला - 171004, से प्रकाशित।